

वही लोकसह हरया गहगही ॥ ६ ॥ वांदा आया श्रेणिकराय नगरलोक पिण वांदा जाय ।
 आपै प्रभुगण धर उपदेश सजलजलद अनुहार विसेस ॥ ७ ॥ अहोभव्य प्राणी तुम्हे सुणौ रमां नव
 भव दुर्लभगिणउ । आर्यलेत्र उत्तम कुलजाणि तेपिण दुर्लभ छेमन आंणि ॥ ८ ॥ धर्मतणी सामग्री
 लही श्रीजिन धर्मकरोऊ मही ! इण भवपांमैरिद्धि समृद्धि परभवपांमै अविचल सिद्धि ॥ ९ ॥
 इम गौतम दीधू उपदेस सांभलियो नरनार नरेस । पहिली ढाल एही अटकलौ कहै जिन
 हर्षहिबै सांभलौ ॥ १० ॥ दूहा ! दानसील तपभावना भेदधरम नाच्यार । इह भव परभव एहथी
 लहीयै सुखश्रीकार ॥ १ ॥ दानसील तपसांहि जो चोथो भावभिलंत । तौ कारिजसीभै सहं
 वंछित सकलभिलंत ॥ २ ॥ निश्चलमनराषी करी परिहरिमननोताप । भाव विशुद्ध हीयडै धरी

जपोयै नवपद जाप ॥ ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ सूर्योत्तर ३ उवभाया ४ मुनिपत्ति ५ टंसण ६ नांण
७ चरित्त ८ तप ९ इण सुंधरीयै चित्त ॥४॥ ढाल २ अलवेलानी ॥ ए नवपद आराधीयै रेलाल
आंणी निरमल भाव महाराजारे । एहधीसह सुखसंपजै रेलाल भवसायरनीनाव म० ॥१॥ ए०
नवपदसंघातै जपै रेलाल सिद्धचक्रचउसाल म० । तेलहैमङ्गलमालिका रेलाल जिमलह्यां नृपश्री-
पाल म० ॥२॥ ए० श्रेणिककहै भगवन कहौ रेलाल कुणते नृप श्रीपाल म० । किमपामी सुपसंपदा
रेलाल किमलह्या भोगरसाल म० ॥३॥ ए० गौतम कहै भगधेसनै रेलाल आराध्यौ सिध चक्र म० ।
रोगगया वंछित लह्यां रेलाल जांणै अभिनवसक्र म० ॥ ४ ॥ ए० श्रीगौतममुभनै कहौ रेलाल
एहनौसह अधिकार म० । सामलिवा मन ऊमह्यौ रेलाल सुणस्यै सज्जनरनागि म० ॥५॥ ए० दक्ष

श्री० पा० च० जी० ॥ २ ॥ रूपसुन्दरि कहै सांभलिवहिनी कसीयै कंचण जेमरे । कीजै धर्मपरिज्ञा करिने
 ४ आलन जपीयै एमरे जो० ॥ ३ ॥ धरमर सज्जकोई भाषै पणि अंतर असमानरे । साकरलुणसरीपा
 दीसै काचपाचसमवानरे जो० ॥ ४ ॥ सूरजषजूयै जिवडो अन्तर अन्तरराजारंकरे । अरकदूध
 गोदूधै अन्तर अन्तरसुष आतंकरे जो० ॥ ५ ॥ चंदन आकधतूरे अन्तर अन्तरविषपीयूषरे । जैन
 धर्ममोटौ जगमांहे जेहथीजायै दूपरे जो० ॥ ६ ॥ धरम अनेक अवै जगमांहे पिणते हिंसामूल-
 रे । धरम जैन अधिको जोवंता जीवदया अनुकुलरे जो० ॥ ७ ॥ एक धरमथीसिवसुष ल-
 हीयै दहीयै कर्म कठोररे । एकथकीपिंड पापभरायै लहीयै नरक अधोर रे जो० ॥ ८ ॥ धर-
 मतणीचर चा मांहोमांहे करद अहो निसिए मरे । प्रीतिरीति सुंवेवे सुंदरी पालै परीजे मरे

जो० ॥ ९ ॥ सुपै समाधै इन परिरहती धरती प्रीउ सु'रंगरे । विषयतणा सुषविलसै बज्ज-
 परि दिनदिन अति उछ रंगरे जो० ॥ १० ॥ काल नजाणै कि महीजातौ प्रिऊ प्रियाइ करा-
 गरे । कहै जिन हर्षढाल एबीजी गावौ आस्यारागरे जो० ॥ ११ ॥ दूहा ॥ सुषविलसंता
 बेजणो जनमो पुत्ती दोइ । राय करै उछवधणौ हीयडै हरषित होइ ॥ १ ॥ राणी सोहग
 सुंदरी दरीभरीगुणप्रेम । तासुसुता मुरसुंदरि नांम बुलावीतेम ॥ २ ॥ रूपसुंदरि बीजी
 प्रीया तेहनी पुत्रीजेह । भवणा सुन्दरी तेहनो नामठव्यौ गुणगेह ॥ ३ ॥ पाचधाइ पाली-
 जता करता प्यालविनोद । वरस पांच नीतेथई दीठा परम प्रमोद ॥ ४ ॥ भणिवा सारिषीथई
 बुद्धितणो भंडार । मातपीता देषीकरी इण परिकरै विचार ॥ ५ ॥ ढाल ४ चरीया मनलागौ

॥ १३ ॥ दूहा ॥ जिन सतिधर अध्यापकै कुमरी भणावीजेह । जिया सतिराच नही धरम
 रंगाणी देह ॥ १ ॥ एक जसत्ता दुविधिनय काल तिसखगति च्यार । अस्त्रिकाय पांचे छए
 द्रव्य सात नयधार ॥ २ ॥ आठकरम जवतत्वतिम दसविध सुनिवर धर्म । पड़िस इन्द्यारस
 वार व्रत जांणै एहवा मर्म ॥ ३ ॥ मूलत्तर कसपवडि इगसौ अष्टावन्न । कर्म बंधना हेतु
 पिण जांणै सत्तावन्न ॥ ४ ॥ बंधह उदय उदीरणा सत्ताजांणै तेह । सुहजविचार सबे
 लहै प्रवचन साध्या जेह ॥ ५ ॥ ढाल ५ आंवाआंविखी रे एहनी ॥ सुंदरिए सुरसुंदरीरे
 जोवनप्रहृती जोर भणीगुणीसगलीकलारे चतुरपणैचित्तचोर ॥ १ ॥ सुगुणनर जोवो पुण्य
 विशेष । पुन्यैलहीयैरिद्धि असीष ॥ पुन्यै लहीयै प्रभुतापेपि बाहुपुन्यतणाफलदेपि सु० ॥ २ ॥

रूपवन्तगुणलवणभारे विद्याप्रभुतासार । मदनाकारणछैसहरे पिणमदनकरैलिंगार सु० ॥ ३ ॥
दूकदिन अथ्यत्तरसभारे बैठौराधउलास । बोलावीवे निजसुतारे साथैपाठकतास सु० ॥ ४ ॥ विन-
यवती निजतातनेरे आवी कीधसलास । चकितथई सगलोसभारे रूपनिरधि अभिराम सु० ॥ ५ ॥
पेलै वेसारीसुतारे राजाधरियविवेक । बुद्धिपरोव्याकारणै रे दीधसमस्या एक सु० ॥ ६ ॥ राइ
कह्यौपदछेहलोरे पुण्येलहीयै एह । गुणवंतौ सरसुन्दरीरे बोली ततपिणतेह सु० ॥ ७ ॥ धन
योवन डाहापणौ रे रोगरहित निजदेह । मनवल्लभ मेलावडौ रे पुण्यैलम्भे एह सु० ॥ ८ ॥ रलि-
यायत राजाधयौ रे साभल तासवचन । कुमरी अध्यापकभणीरे लापगमे दीधौधन्न सु० ॥ ९ ॥
लोक पुस्याल सह थयारे रंज्या रांणीभूप । सज्जको लोक कहैदूसरे एतौ सरसतिरूप सु० ॥ १० ॥

श्री०पा०च० तुम्हे प्रिय मैणासुन्दरीरे समस्यापूरो एह । अनुमतिलहै निजतातनीरे कहै कुमरी गुणगेह सु०

७ ॥११॥ विनय विवेक प्रसन्नतारे सील सुनिर्मल देह । सिवप्रदनो मेला बडोरे पुन्यैलहीयै एह सु० ॥

॥१२॥ मातपिता हरषित थयारे हरष्या लोकनजात । प्रायै मिथ्यातीभणीरे नगमै उत्तमवात सु०

॥१३॥ उत्तम उत्तमनैगमै रे गोचनै नो बसुहाइ । ढालथर्द्र एपांचमीरे कहीजिनहर्षबनाइ सु०

॥१४॥ दूहा ॥ कुमरीनोऽणपरिकरी बुद्धिपरिधाराय । आगलिजेथायैहिवै तेसुणिज्यौ

चितलाई ॥ १ ॥ कुरुजंगलदंसे अछै संघपुरीदणनांम । नगरीतिहनो राजवी दमितारो अभि- ७

राम ॥ २ ॥ उज्जैणीगाजातणो नितप्रतिसारैसेव । निजवदलै एकणवरस मूक्यौ अंगजहेव ॥३॥

नामतासक्यै अरदमन अरदमिकीधाजेर । जाणैसूरतिकामनी नारिरहै नितघेर ॥ ४ ॥ भमरो

केतकिगंधसुं मांडिरहै जिममोह । तिमसुखपामै नारीयां कुमरिनिहालीसोह ॥ ५ ॥ ढाल ई
 जाटणीनी ॥ मदन मलोहर कुमर कलानिलो देषी जोवन वयसुकमाल ॥ कुमरो मोहीहो कुमर-
 सुजाणसुं । नयने जोवैहो फिराफिर कुमरने पांमै सुषसुपतास निहालि कु० ॥ १ ॥ दीठांहीयड
 उहेजे उलसे दीठापापै अंदोह कु० । एतौ अण पापेपाणीरसौ एहवौपापीरेखोह कु० ॥ १ ॥
 ठाक्यौ नरहै किमहोनेहलो जो करौ कोडि उपाय कु० । आगछिपार्दवासपलालमै परगटते
 धिण माहेघाय कु० ॥ ३ ॥ चोवाचंदन कुसमनो वासना छानीधरीयै छिपाय कु० । तौहि पिणसांहे
 परगटज्यै तिम एनेह टिषाय कु० ॥ ४ ॥ बापैजाण्यो नेह सुतातणौ पुत्तीसांभलि तु सुविचार ।
 जेम न माने जेहसुं प्रीतडी ते परणावुं भरतार कु० ॥ ५ ॥ हीयडै हरषी कुमरो इमकहै लोक

श्री०पा०च० तणी तजिलाज कु० । वांछ्यौवर पांसुं तो एहनै परणावौ महाराज कु० ॥६॥ अथवा तुम्हे सुभानै
परणाविस्थौ माहरै तेह प्रमाण कु० । बापदीयौ वर कन्यावरइ तेसुक लीणी सुजांण कु० ॥ ७ ॥
तुमथी लहौयै बंछितवापजी तुमथी सुप्रलहौयै श्रीकार कु० । पोतानोंजांणी सुषणीकरो तुम्हे मा-
हरै करतार कु० ॥८॥ इणवचने राजा तूठौ कहै जांणी अंतरभाव कु० । ए अरिदमण कुमर पुत्ती
वरो जुगतो सरलसुभाव कु० ॥९॥ सज्जकौने मनमांनि वातड़ी भलौकह्यौ महाराय कु० । सरिसास-
रिसो एजोड़ी जुडी आवी सज्जकोनइदाइ कु० ॥१०॥ लोक सज्जकौ राजानै कहै होस्यै इहां रंगरोलि
कु० । एहजमाई सोभै तिमधरे जिममुष सोभै तंबेल कु० ॥ ११ ॥ राजा पिण रलीयायत थई-
करी कोधो वचन प्रमाण कु० । छडीढाल सगार्इ नृपकरी कहै जिनहरष सुजांण कु० ॥ १२ ॥

दूहा ॥ हिवमयणानै पूछीयौ पिणबोलै नहीतेह । नीचीदृष्ट निहालती मुषडै लाजकरेह ॥ १ ॥ पुनरपि राजा पूछीयौ पुत्रीमुक्तनै भाष । ताहरामनमां हे ऊवै वरनीजे अनिलाष ॥ २ ॥
 बार बार इमपूछता कुमरी थई सलाज । मुषमुलकी कहै तातनै पूछणस्युं स्यौ काव ॥ ३ ॥
 चतुर विचक्षणकौतुम्हे जाणौ कौ सऊनीति । कुलकन्यानै पूछीयै एह नही जुगतीरोति ॥ ४ ॥
 कुलवती कहौ किमकहै सुभपरणावौ एह । मात पिताजेहनै दोयै तेह जबर सुतेह ॥ ५ ॥
 निश्चय सुंजो जोईयै ते पिणवाह्य निमित्त । सषदुषपामै प्राणोयौ निज २ प्रबक्रित ॥ ६ ॥
 ढाल ७ मयामोहिदिषणो आणि मिलाइ एहनी ॥ मयणाक है सुणितातजीरे पूरबलिखित
 प्रमाण । ते सगली आवीमिलै होजोकेहौ दूहा विनांण ॥ १ ॥ पिताजी कर्म सबलजगमांहि

कर्मकरैतेहिजज्जवै होजी सुष दुष अरति उछाह ॥ २ ॥ पि० जिणवेलायै जेहवारे जीव
 कीधाकर्म । उदयथया तिण अवसरै होजीलहोयै फलनो कर्म ॥ ३ ॥ पि० रंक फोड़ो राजा-
 करैरे राजाफोड़ीरंक । एहवौ कुणफोड़ीसकै होजी कर्मलिप्या जे अंक ॥ ४ ॥ पि० राय कहै
 पुत्रीमुणौ रे तुं मुक्त प्राण आधार । वार वार तुमसूकज्ज होजीमांगि बंछित भरतार ॥ ५ ॥ पि०
 सुताजीजं सबलोजगमांहि । मुक्ततूठै सकसंपजै होजी सुख दुख अरति उछांहि ॥ ६ ॥ सु०
 माहरी आस्यासह करै रे निबलानै बलवंत । हंतूठौ दालिदगमूं होजीरूठोजांणि कितंत ८
 सु० ॥ ७ ॥ रंकप्रतै राजा करूंरे रायभणो करूंरंक । सबला ते पिण माहरीरे होजीमानैमां
 संक स० ॥ ८ ॥ करणमतैत्युहं करूंरे सुष दुषमाहरै हाथ । रूठोजमघर मोकलूं होजी-

तूठोकहूं नरनाथ सु० ॥ ६ ॥ बलित् मयणावीनवैरे तातसुणौ मुक्तत्त । तुमनै पिणकरमै
कीया होजो राजन राजनिमित्त सु० ॥ ६ ॥ जेहनैपोतै पुन्यछैरे तेहनैरुसै राय । पुन्यविना-
तूसै नही होजीजोकरैलाष उपाय पि० ॥ १० ॥ छोरूपिण मोटातणारे सुषीया दुषीया होइ
कारण छद्दसज्ज कर्मनो होजीगरब मकरज्यौ कोइ पि० ॥ ११ ॥ थाप्यौ कुमरो कर्म नैरे उथाप्यौ
नृपवैण । रोसवसैथयौडाकलौ होजोकीधा रातानैण पि० ॥ १२ ॥ गरबकरौ षौटौजिकैरे तेहमै
किसोसवाद । ठालथई एसातमी जिनहरप सुतानृपवाद पि० ॥ १३ ॥ दूहा ॥ रीसाणौ नृप
इमकहै रे रे मूढगिमार । तूंलीला सुषभोगवै तेसज्जमुक्त उपगार ॥ १ ॥ पहिरैकंचण आभ-
रण नव नव विस बणाव । पाणापोणा पेलणा तेसज्जमुक्तपसाव ॥ २ ॥ मयणा कहे सुणि-

श्री० पा० च० तातजी हं तुम्ह कुलउत्पन्न । मै पांमी सुखसाहिबी तेसुभ पौतैपुन्न ॥ ३ ॥ मयणा इणि परि-
१० भाषतां राजाययौ क्तिंतंत । जिमपावक घतसींचीयौ बाधैकाल अत्यंत ॥ ४ ॥ भाग्यहीण एदी-
करी दीसैकै परतछ । कछ्यौ नमानै माहरौ लीयौ नमेलै पछ ॥ ५ ॥ क्रोधवसै थयौरातडौ
धमधमीयौ नरनाह । सगपणबेटीवापनौ भागौमन उछाह ॥ ६ ॥ ढाल ढ नायकानी ॥ मयणाकहै
सुणितातजीरे इवडौ मकरौरीस मोरा तातजीरे । जाणतुम्हे सज्जवातनारेलाल तुम्है मोटा
अवनीस मो० ॥ १ ॥ म० फोकट गरब नकीजीयैरे गरवै सज्जगुण जाइ मो० । इंद्र नरेंद्र पिण ॥ १०
गर्बथीरेलाल लघुतापणौ लहाइ मो० ॥ २ ॥ म० तुम्हे कहो जेहंकरुं रे सुषीया दुषीया लोक
मो० । करता हरताहं सहीरेलाल तैतौ इमहीफोक मो० ॥ ३ ॥ म० तुम्हसेवाथी ओऊवैरे

सुप्रीया सज्जगमांहि मो० । तुम्ह सेवाकरता नथीरे लाल तेतो सुप्रीया कांइ मो० ॥ ४ ॥ म० राय
 कहै रूठोयकिरेलाल तुनिरधनवर जोगरे । दुहागिणि एमतिसारून विमिलैरेलाल तुम्हनेउत्तम
 भोगरे दु० ॥ ५ ॥ म० मयणा सुणिसुभवातडीरेलाल ताहरै पोतै पापरे दु० । तौसभै तुम्हएह
 बुंरेलाल पामिसवज्ज संतापरे दु० ॥ ६ ॥ म० हठमानी पोतातणैरे जांणैजं बुद्धिवंतरे दु० । सम-
 भावा समभै नहीरेलाल अवगुणएह महंतरे दु० ॥ ७ ॥ म० राती निजगुणग्यान मैरे मूरष
 निगुण निटोलरे दु० । लेखवती कहनै नथीरेलाल मूढ नजांणै बेलरे दु० ॥ ८ ॥ म० जं-
 जाणुं सुपणीकरे परणावुं वरसाररे दु० । पिणमाहरो नकरै कछोरेलाल थायैस दुपभं-
 डाररे दु० ॥ ९ ॥ म० मयणाकहै तुम्हनै रुचैरे ते परणावौ नाह दु० । सुम्हपोतै पुन्यजोऊस्थै

रेलाल तोसुभ ह्येस्यै लछाह दु० ॥ १० ॥ म० गाढेरोरोसावीयोरे सांभल एहवाबोल दु० ।
 मोटाबोली दोकरीरेलाल सुभ लेषव्यौ दणतेलरे दु० ॥ ११ ॥ म० सुभनै दण जथापीयौरे
 थाप्यौ वषत सहायरे दु० । कहै जिनहर्ष सहसुणीरे लाल आठमी ठाल कहाइरे दु० ॥ १२ ॥
 म० ॥ दूहा ॥ रोषातुर नृपदेखिनै मंलीचिंतै एम । ठाहं वयण सुधारसै सोतलथायैजेम ॥ १ ॥
 महाराय रघवाड़ीयै रभिवानौ छै लाग । जईयैरमिवा आजप्रभू फूलरह्यौ छै वाग ॥ २ ॥
 अंतरगतिदाभीरह्यौ क्रोधागनि विकराल । उण्यौतुरत जतावलौ मांन वचनभूपाल ॥ ३ ॥ चर १ ॥
 वादार प्रतै कहै करौ तुरंग तदयार । ऊकमसुणी आण्यौतुरी सफलाण्यौ तिणवारं ॥ ४ ॥
 चतुरंगसेना परिवर्ध्यौ रायथयो असवार । हिवै आगलिजेनीपजै ते सुणिज्यौ अधिकार ॥ ५ ॥

ढाल ६ रेहमीरीयारे रहि वैरीनैणमकोलतो एहनी ॥ राय रयवाडी संचर्यौ आगलि ऊडै-
 घेह । मंवीसर । राजा चकितथई कहै आवैकै कुण एह मं० रा० ॥ १ ॥ आडबर करताथका
 न धरै कासिगवाह मं० । कोलाहल हलबोलसुं मंवी कहै सुणिनाह मं० ॥ २ ॥ रा० एपैडौ
 कोठीतणौ सातसया परिवार मं० । कोठी सडभेलाथया वाप्यौ रोग अपार मं० ॥ ३ ॥ रा०
 राज कुंअरएक नांन्हडौ आवीमिलीयो मांहि मं० । तेपिणकोठी फरसथी जंवर रोग लहाय मं०
 ॥ ४ ॥ रा० जंवररोगथको थयौ जंवरराणौनाम मं० । ते आवैकै एचल्यौ एअ समाधनोठांस
 मं० ॥ ५ ॥ रा० असवारी विसरतणी परवरीयो परिवार मं० । गतनासा चामरधरै गलित त्वचा
 छवधार मं० ॥ ६ ॥ रा० घंटाहाथे भालिनै सुहरचलै गतकर्ण मं० । 'लोकांनैबीहावनि भूंडौ

श्री० पा० च० जैहनौ वर्ण मं० ॥ ७ ॥ रा० कोढमंडल अंगओलगू गलितांगुल मंचीस मं० । सर्वगलितको-
१२ टवाल छै तेहमै जंवर ईस मं० ॥ ८ ॥ रा० द्वादमंडलके ठेगल्या दीसंता बिकराल मं० ।
सेवक तास दोहागीया राधिरुधिर पर नाल मं० ॥ ९ ॥ देसाधिप पासै लीयै मननौ मांन्यौ
माल मं० । नाकोई नकही सकै एहवी एहनीचालि मं० ॥ १० ॥ रा० तेह भणोबीजीदिसै
चाल्यौ श्रीमहाराय मं० । जावाद्यौ एकोढीया जिम दरसण न विधाइ मं० ॥ ११ ॥ रा० बीजी-
दिसि राजा चल्यौ मारगछोड़ी जांम मं० । कोढीठं दे निरषीयौ हकल करतातांम मं० ॥ १२ ॥ १२
रा० आव्यादे जंतावला नृपसांखा तिणवार मं० । तब राजा एहवुं कहै सुणिमंची सुविचार
मं० ॥ १३ ॥ रा० परचावौ पासै जई मुहमांग्यौद्यौ माल मं० । पिणदूरै रे रहाविज्यौ करि

ज्यौ सुपलालपाल मं० ॥ १४ ॥ रा० ऊकमदोषौ मुहताभणी वीहंतै भूपाल मं० । कहै जिन ङर्ष
पूरीधई नवमो ढालरसाल मं० ॥ १५ ॥ रा० । दूहा ॥ गलितागुल जतावली जंवरनौ परधान ।
ते पहिली आवीकहै साभलिहो राजान ॥ १ ॥ ऊम्बरराणौ अन्हतणौ साहिवछै सुपरांण । मानै
सऊकौ तेहनै कोइ न लोपै आंण ॥ २ ॥ मणिमाणिक कंचिणरयण भोजन कूरकपूर । ऊम्बर
राणौ ऊकमसुं मझावै भरपूर ॥ ३ ॥ अन्है सहसैवक नफर सुपोवाता सपसाय । कजी नही
किण बातनी पिण साभलि महाराज ॥ ४ ॥ राणी नही राजातणै एछै मोटी षोड । दूककन्या
द्यौ अमभणी-जिम पुहचै मनकोडि ॥ ५ ॥ ढाल १० वातजकाढौहौ ब्रततणी ॥ राय कहै किम
दीजियै निजकन्या गुणवन्तौ रे । रोगी नरनै अपता जगमै अपजस लहन्तौ रे रा० ॥ २ ॥ बलि

तौ गलितांगुल कहै ताहरौ जसजगगाजै रे । मांग्यौदौ मालवधणी एहविरुद्ध तुम्ह काजै रे रा०
 ॥ २ ॥ कैतौ कीरतिहारोयै कैदीजै निजकन्या रे । जेहवी तेहवी अन्ह भणी मानीस्यै ते धन्या
 रे रा० ॥ ३ ॥ पड़ीयौ रायविचारणा अलुगत वातसुणार्दै रे । किमही दुरसपडै नहो दोतड़
 पड़ीयौ भाई रे रा० ॥ ४ ॥ नृपनैमयणा सांभरी कन्याएवर जोगी रे । अविनयनो फलजिम
 लहै थायै दुषिणी रोगी रे रा० ॥ ५ ॥ कीरति कहो किमहारीयै दोहिलीजे जगमांहे रे । कन्या
 देता जसरहै तौ जसगमीवै काहे रे रा० ॥ ६ ॥ सुम्ह मन्दिर तुम्ह आविज्यौ इम कहि पाछो १३
 वलीयौ रे । राय गृहांगण आवीयौ मालीतौ हलफलीयौ रे रा० ॥ ७ ॥ तेड़ी मयणा सुन्दरी
 राय कहै सुण बेटीरे । ऊं तुम्ह नै सुपचिन्तवुं तुं अवगुणनीपेटीरे रा० ॥ ८ ॥ बाप सुकरमीजे

ऊँ वै वंछितवर परणावुं रे । 'हठ परहर सब बालिका दोहग दूर गमावुं रे रा० ॥ ८ ॥ जौ आप
 करमीतुं ऊँ वै तौ वर ऊँवर रांणौ रे । तुम्ह करमैए आणीयौ परखेवानो टाणो रे रा० ॥ १० ॥
 मयणा मुलकीनै कहै वपतलिल्यौ वरराजौ रे । ते सुभसिरनौ सेहरो मांहरै तेहसुं काजो रे रा०
 ॥ ११ ॥ रायै ते तेडावीयौ सपरवारसुं आयो रे । करमसंयोगै नृपकहै तुं वर मयणपायो रे रा०
 ॥ १२ ॥ उम्बर कहै एराजवी वातन जुगती दीसै रे । दसमी ढाल पूरी थई कहै जिन हर्ष
 जगी सै रे रा० ॥ १३ ॥ दूहा । वायस कंठइ कनकनी जिस सोभै नहीं माल । जोडी नहीं वग
 हंसनी तिमसुभनै एवाल ॥ १ ॥ राय कहै एदीकरी कछ्यौ न मानै सुभ । आप करम मानै सही
 तिण आपुंछू तुम्ह ॥ २ ॥ सुभ दीधौ वर आदरै तउपरणावुं जोय । करम मांहि तूहिज

लिख्यी सुभनै दोसन कोइ ॥ ३ ॥ दयानआंणी चित्तमै नांखो नेहलिंगार । लोककहै एस्युं थयौ
अ० पा० ४० करै अधम आचार ॥ ४ ॥ उत्तम कोप करै नही करै ते मांन प्रमाण । पिणएजुग तू न विकरै
१४ कोपै चढ्यौ अयांण ॥ ५ ॥ ढाल ११ बंगरी यानी ॥ जम्बर कहै सुणि राजवीरे । माहरी नही
एजोगि रे ॥ गुणबंता । ऊं कोढ़ी रोगै भर्यौ रे । रतन लगा डूँघोड रे गु० ॥ १ ॥ सुभ
सोभै नही एकांता । मै पातक कीया अनंता गु० ॥ सुभ दीषी सज्ज बाहंता तिण एहनो नही
सुभ कोडि रे गु० ॥ २ ॥ एकन्यांनै हंकिहां रे एहंसी हं काग रे । सरिषै सरिषौ जो जिलै रे १४
तौ सोभै महाभाग रे गु० ॥ ३ ॥ अविचार्यौ जो कीजीयै रे लोक हंसै धरि हांणि रे गु० ।
तुमनै एहवुंनचिषटै रे अपजसनो एषांण रे गु० ॥ ४ ॥ तूंद्यै पिण हं ल्युं नही रे याओ तुभ

कल्याण रे गु० । बीजीठामे सांगिस्थुं रे ऊम्बरनो एवाणि रे गु० ॥ ५ ॥ राय कहे एस्थुं करुं
 रे एहनौ एहवौ भाग रे गु० । बाकनको तुम्ह सुम्ह तणौ रै एकन्या तुम्ह लागि रे गु० ॥ ६ ॥
 मयणानि सुनो एहवुं रे जठी तुतरतति वार रे गु० । एवर लिषोयौ भागमै रे तौहिव किशौ
 विचार रे गु० ॥ ७ ॥ ऊम्बर कर निज करगुह्यौ रे मयणा धरीय विवेक रे गु० । कोठी वर
 पिण आदर्यौ रे छोडी नही निज टेक रे गु० ॥ ८ ॥ उमरा उसामंतजे रे मली सरपर धान
 रे गु० । अंते वरवारै सज्जरे बलै नही राजन रे गु० ॥ ९ ॥ लोक सज्ज जोई रह्या रे दुषभर
 रोवेसैण रे गु० । सुपमैधाली आंगुली रे दूण परभापै वैण रे गु० ॥ १० ॥ एअजुगतुं नृपकरै
 रे काडोजपरिषाव रे गु० । पिण कोई न कही सकै रे राजा वदै सुन्याव रे गु० ॥ ११ ॥ एअई

ठाल इग्यारसी रे कीप्यौ राय अपार रे गु० । कहै जिन हरष हिवै सुणौ रे आग लिजै अधि-
 कार रे गु० ॥ १२ ॥ दूहा । रोवतां इणपरि सह कहै अधज एभूप । रयण अजूलक कन्यका
 किम नांघेछै भूप ॥ १ ॥ छोरुकु छोरुजे ऊवै तौही पहिड़ै नही मावीति । भोलपणै एह वौ कह्यौ
 तौही राजा चालै नीति ॥ २ ॥ छोरुवेचे बाप जौ तौ कुण आडौ थाय । जोरन चालै रायसुं
 सह करै हाय हाय ॥ ३ ॥ दुर्लभ दरसण देषतां मयणा मोहन वेलि । आंवाएरंडपाषती रोपै
 छैगुण गेलि ॥ ४ ॥ सगले कीधा वीनतो सह कह्यौ समभाय । कहणा माहेकेहनी बाकी न रही १५
 काय ॥ ५ ॥ ठाल १२ सुगुण सनेही मेरे लाला एहनी ॥ मयणा निज मन काठौ कीधो । जो
 सुभ वषतै एवर दीधो ॥ तौ मा हरै ए ऊम्बर रांणौ । इण भव एहिज प्रीतम जांणौ ॥ १ ॥

इहां कोई नो नही छैचारो । वाक न कोई इहां पितारो ॥ दाय उपाय अनेक विचारो । करम
 सबल जग माहि अतारो ॥ २ ॥ मन दृढ देषी कुमरी केरो । राय बल्यौ मन मां हि घणैरो ॥
 सतीशिरोमणि सत्वनचूके । लीधो पषसा पुरसन मूकै ॥ ३ ॥ सायर मरज्यादा जो लोपै । क्षमा-
 वन्त सुनिवर जो कोपै ॥ सेषनाग मुषजो विष उलटै । तौ पिण उत्तम वयण न पलटै ॥ ४ ॥ पवन
 बुलायौ मेरनडौलै । मोटा दीनवचन न विबोलै ॥ आपद संपद मां हि सरीषा । ते मरबावन
 वीर सरीषा ॥ ५ ॥ कर मायत्त सज्जए दीयै । कुमरी निज मन माहे हींसै ॥ एहवौ देषी
 राय परणावी । ऊम्बर राणानै मनभावी ॥ ६ ॥ ऊंवर कुमरो विसर चढीया । निज डेरानै
 पंथै पडोया ॥ नगरलोक सह्र ऊभाजोवै । करे कुलाहल डसके रोवै ॥ ७ ॥ एक कहै धिग धिग

ए राजा । एहनाषोटा थयादिवाजा ॥ कोई कहै कुसरी अयाण । राजा रायवचन कीयौ पर-
माण ॥ ८ ॥ कोई कहै मा भूँडो कोधो । निज कन्या नै सीष न दीधो ॥ कोई पाठक अवगुण
काढ़ै । जिन मतनै कोई दूषण चाढ़ै ॥ ९ ॥ अयणा चाली ऊँवर संगै । हीयछे हरष धरी छठ
रंगै ॥ जैनधरम मीजी भेदाणी । किम पलटै तेहनी कहो वाणी ॥ १० ॥ बारमो ढाल थई ए
जांणी । कुसरी परण्यौ उँवर रांगौ ॥ करम तणो जिन हरष कहांणी । ग्यानी विण न विजाये
जांणी ॥ ११ ॥ दूहा । हि वै बीजी कन्या तणौ जोडेवा वीवाह । तेडावी सिव भूतनै इन भाषे १६
नर नाह ॥ १ ॥ लगन अनोपम जो दूवो गिरदूषण ओकार । सुरसुंदरि परणावीधै करी सहो-
च्छवसार ॥ २ ॥ लगन शुद्धबै असुक दिन एह बोल गनन कोइ । ज्योतिषशास्त्र निहाल तां एह-

बो कदो कहोइ ॥ ३ ॥ जोसी वचन प्रमाण करि माझौ रायविवाह । परणावु सुरसुंदरी
 अधिको करो उछाह ॥ ४ ॥ ढाल १३ करडौ तिहा कोटवाल एहनी ॥ प्रीति धरी मन मांहि
 राय तेडाव्याहो साजण आपणा । सगासणी जा लोक प्रीतिवधारण हो आव्या अति घणा ॥ १ ॥
 राजवीयोरै साथि आव्याहो राजकुमर रलीया मणा । अमरपुरी अवतार नगरविराजै मनुष्य
 सुहामणा ॥ २ ॥ डेरा तंबू तांणि मंडपरचीया हो नव नव भातिना । रंग मंडप रंगाविकारण
 कीधा हो सगला पातिना ॥ ३ ॥ लोकिक विधि सज्ज कीधतेहनो स्थूँ कहौयैं लोक जाणै सह ।
 आव्यौ लगन सुदीस आरिभ कारिभ कीधा तिहा बज्ज ॥ ४ ॥ हिवै अरदमण कुमार सुंदर वा
 गाहो अंग वणावीयौ । पुरुष तणासिणगार कीधा हो सज्जकोनै मनभावीयौ ॥ ५ ॥ चंचल

घपल तुरंग सोवनसाकत चढ़ीयो नचावतो । जांणै देवकुमार सुषजै तंवोल सुरंगा चावतो ॥
 चवरी मंडप मां हि कुमर आवीनै बैठो तिन सभै । बैठा सहू भूपाल वेह वणावी कंचन कलस
 मै ॥ ७ ॥ सोलैही सिणगार कुमरी वणाया सुंदर मनरली । आवी चवरी मांहि वादल मां
 जांणै चमकी वीजली ॥ ८ ॥ बैवी बरनै पासि सोहै जांणै श्रीपति रुकमणी । सोभा अधिक
 सुहाइ जांणै इंद्राणी इंद्र कन्है वणी ॥ ९ ॥ फिरौ या फेरा च्यारि च्यारे चमरीमां मंगल बर-
 तीया । कन्यावर कंसार मांही मांहे मिलि जा रोगीया ॥ १० ॥ वरकन्या वीवाह करपरणा
 व्या ढोलपुरावीया । गिड धुं धुं धुं घुर्यारेनीसांण भेर भुङ्गल वाजावजाविधा ॥ ११ ॥ थयौ १७
 सुरंग विवाहरंग सुरंग रह्यौ वेवाहीयां । जभाचारण भाट विरुद भणै मनडै उमाहीयां ॥ १२ ॥

हथ लेवौ तिणवार जोसी जोडाव्यौ रुडी जुगतिसुं । ए थई तेरमी ढाल कहै जिन हरप जाण
ज्यौ विगति सुं ॥ १३॥ दूहा । करमे लावै नृपदीया सोवनरयण भंडार । सुंदर घोडा हाथीया
दासी दास अपार ॥ १ ॥ बज्र मोलिक वागादीया रतिन जडित सिणगार । सोवन पाए
ढोलीया सुउडि तुलाई सार ॥ २ ॥ दोधो सबलो ढायजो कह ता नावै पार । प्रीति तिहा दे
तां थकां न करै कोई विचार ॥ ३ ॥ राजा राणी नौ धणौ पुत्री उपरि प्रेम । माल अमामो
आपीयौ प्रीति जणावी एम ॥ ४ ॥ कोधी बज्र पहिरावणी राजवीधानै रंग रसराप्पौ जस
संग्रह्यौ वाध्यौ प्रेम अभङ्ग ॥ ५ ॥ ढाल १४ राजा जौमिलै एछनी ॥ लोकलुगार्ई मिलीया अछेह ।
वात करे मांहो माहि तेह ॥ पुन्ये सज्ज मिले । पुन्ये सननामान्या सज्ज मिले ॥ पुन्ये उत्तम सयण

સંયોગ । પુન્યે લહીયે પરવલ ભોગ પુ० ॥ ૧ ॥ સુન્દરિ મિન્દિર રમણિ વિલાસ । પુન્યે પહ્લવે
 મનની આસ ॥ પુ० જોવૌ કુમરી નૌ પુન્ય પ્રકાસ । વંછિત વર લહ્યૌ લીલ વિલાસ પુ० ॥ ૨ ॥
 દેવકુમર સરિષૌ વરરાજ । કુમરી અપહરને સિરતાજ ॥ પુ० સરિષી જોડિ જોડી જગદીસ ।
 સુખભોગવિસ્યે એ નિસિદોસ પુ० ॥ ૩ ॥ કરિસે રૂપ સફલ હિવે દેહ । જોવન સફલ લેસ્યે ગુણ
 ગેહ ॥ પુ० એહવૌ વરવરરિદ્ધિપદૂર । લહીષે જો હવે પુન્ય અંકૂર પુ० ॥ ૪ ॥ માગ્યવતી કુમરી
 એધન્ય । એહ સરીષૌ નહી કોઈ અન્ય ॥ પુ० એક વાપની પુત્રી દોદ્ર । પરતિષ પુન્ય પટન્ટર
 જોદ્ર પુ० ॥ ૫ ॥ એકકહે વાહુકર્યૌ રાય । રાજા તૂઠેસ્યું ન વિધાય ॥ પુ० એકકહે કુમરી
 બુદ્ધિવન્ત । બાપ પુત્રી કરિ વરીયૌ કન્ત ॥ ૬ ॥ પુ० અધ્યાહ્નને હાથે સિદ્ધિ । મળી ગુણી પાંમી

बलिरिद्धि पु० ॥ एक कहे परतिप फल जोइ । सैव धरमथी स्युं न विहोइ पु० ॥ ७ ॥ पाछ
 लिभव इणि पूजी गौरि । फललहस्ये आगे एतौ मौरि ॥ पु० लोकमिली इण पर करे वात ।
 जीतानाविली कहि वात पु० ॥ ८ ॥ मयणाने पोते नही पुन्य । पुन्य विना किम थईये धन्य ॥
 पु० राजवीयांसुं करीय उपाधि । तौ जोवौ तेहना फललाध पु० ॥ ९ ॥ इम निजइ सुष बोले
 बोल । समझि विहंणा निगुण निटोल पु० ॥ कहै जिन हरष एचवदमीं ढाल पु० ॥ १० ॥
 दूहा । हिवै राजा ताजा प्रबल विवध भांति पकवांन । असन पान खादिस प्रसुप जुगति जिमाडी
 जान ॥ १ ॥ ऊपर दीधा अति अबल पान लवंग मुखवास । जस लोधो जीमा इनै सज्ज कहै सा
 वास ॥ २ ॥ सगा सज्ज संतोषीया परच्यौ माल अपार । पुत्री हिवै चलाइवा राजा थयो तयार ॥ ३ ॥

હયગજરથ પાયક પ્રવલ નિહસપડેનીસાંણ । કુમરી ન માતા દીયે સીષ ભલી હિત આંણિ ॥ ૪ ॥
 ઠાલ ૧૫ દતલા દિનજં જાણેતીરેહાં એહની । હિવતે સોહગસુંદરી રેહાં પુત્રોને દીયે સીષ ।
 બાંદે સાંભલો । સાસરીયાં સંતોષિજે રેહાં ફલ વૈભરજે વીષ વાં ॥ ૧ ॥ તું છેચતુર સુજાંણ રેહાં તું
 સુખ આતમ પ્રાંણ વાં । વિદ્યાપ્રિયનીષાંણિ રેહાં તુમ્હ સુષિ મધુરી વાંણિ વાં ॥ ૨ ॥ સેવકરૈ
 પરીજણ તણી રેહાં સ્વજન તણી સુવિસેષ વાં ॥ કુવિચન મકહિસ કેહને રેહાં કિણસું મકરસ
 દ્રેષ વાં ॥ ૩ ॥ દેવ તણી પરિપૂજિ જે રેહાં ભગત કરે ભરતાર વાં । કહ્યો સલોપે પ્રિય તણી ૧૯
 રેહાં ઉત્તમ સંગતિ ધાર વાં ॥ ૪ ॥ સાસૂ નણદ જે ઠાણીયાં રેહાં પડિજે સજ્જ નૈ પાય વાં ।
 સુસરાની સેવા કરૈ રેહાં સજ્જ નૈ આવૈ દાય વાં ॥ ૫ ॥ સૂરજે નાહ સૂતા પછે રેહાં જીમિ નાહ

जीमाडि बा० । भोजन वेला घर तणा रेहां मेल्हे बारउघाडि बा० ॥ ६ ॥ आवै कौई मांगिवारेहां
 न करे तास नाकार बा० । पर कर ऊपरि कर'करे रेहां भरजे सुजस भंडार बा० ॥ ७ ॥ रुडौ
 घर देपालिजे रेहां चलि जे चतु आचार बा० । सुपीहरी कह राविजे रेहां करिजे सज्ज नी-
 सार बा० ॥ ८ ॥ भूपा दुषीया देषनै रेहा करिजे करुणा सदीव बा० । दोल तिहत्यो थारु जे
 रेहा कठिण करे मति जीव बा० ॥ ९ ॥ निसनेहणि मति यादजे रेहां लिपि मोकालिजे लेख
 बा० । पुत्नी प्रीतम माणसां रेहां सुष लयीयै देषि देष बा० ॥ १० ॥ जीव थकी तूँ बाल ही रेहां
 तु अन्ह प्राण सरीष बा० । कहै जिन हर्ष सह्य भणी रेहा पनरमी ढालै सीष बा० ॥ ११ ॥ दूहा ।
 मातपिता पाय लागिनै कुमरी चली प्रीउ साथ । हय गज पायक सुं हिवै बोलावै नरनाथ ॥ १ ॥

ए मंदिर ए मालीया नगरी आही ठांण । सुभनै वीसरि स्यै नही राति दिवससु प्रमाण ॥ २ ॥
 सीष करी सज्ज लोकसु नयणे नीरप्रवाह । होयौ फाटै आयनौ चल्यौ विरह अथाह ॥ ३ ॥
 गलि लागी पुत्ती तणै मादू करै आक्रंद । प्रेम तणै परवस थई है है मोहनरिंद ॥ ४ ॥ आंसू
 कुमरी लोयणे जलधर जिम संजोई । हल्यली छाला पड्या चीर निचोइ निचोइ ॥ ५ ॥ रोतां
 नृग रोवरावीया वाट वटाऊ लोक । जांतां जीव वहै नही वीछड़वानौ सोक ॥ ६ ॥ कुमरी
 चाली सासरै हिलमिल सीष करेह । फिर फिर जोवै पाकुलै डब डब नयण भरेह ॥ ७ ॥ हिवै
 जंवर राणां तणै सांभलि ज्यौ अधिकार । मन मां निश्चय राषीयौ न धरै दुषलिगार ॥ ८ ॥ ढाल २०
 १६ बिंदली तौ नणद गुमा ईन्हारै लहौड्य देवर पाईहे नणद बिंदली ल्यै एहनी ॥ जंवर कहै

सुणि कुमरो तुंतौ रूपै जाणो प्रसगी हो । सुन्दरि वयणि सुणौ । राय अजुगति कौधी मुभ कोठीनै
 तु दीधी हे सु० ॥१॥ वयण सुणौ मृगनवणी मृगराज कटी सिसिवयणी हे सु० । विधिना रूपनी
 पायौ देपो पोते सुप पायौ हे सु० ॥ २ ॥ ए जोवन तुम्हनी को सज्ज नारि तणै सिर टीको हे
 सु० । मुभ आणा सिरधारी कोई पुत्तप अवर सुविचारो हे सु० ॥ ३ ॥ भोगवि तिणसुं भोगा
 मन गमता सरस संयोगा हे सु० । ऊकम धणी नो होई इम कर ता दोष न कोई हे सु० ॥ ४ ॥
 नारि रयण तुं हीरा ऊं नर मै काचक थीरा हे सु० । तुं तौ उत्तम हंसी ऊं वायस जाणि
 कुबंसी हे सु० ॥ ५ ॥ मुभ हियडै दुष भाभुं राय करणी देपो दाभू सु० । तै माटै ञ्ठ छोडी मुभ
 ऊकमै कर काई जोडी हे सु० ॥ ६ ॥ मुभ पासै तेरहिस्यै तुम्हसुं सुपफल भोग विस्यै हे सु० ।

उम्बरनी ए बांणी सुणि मयणा दुषभरांणी हे सु० ॥ ७ ॥ प्रीतम वयण सुणौ । नयणे नीरप्रवाहा
 करजोड़ी कहै सुणि नाहा हो प्री० । चरणे सीस लगावी कहैसी एवात सुणावी हो प्री० ॥ ८ ॥
 मनिमां जांणी रहिज्यो फिरिवीजीवार मकहिज्यौ हो प्री० । अधम जनम नारी नौ जैलौ जांणे
 कुण्डगारी नौ हो प्री० ॥ ९ ॥ तजीयै सील अमोलौ तौकांजी कौही तोलै हो प्री० । सीवल
 विभूषा कह्यै सीलै जस महीयल लहीयै हो प्री० ॥ १० ॥ इणि भवप्रिय तुं मोरै ऊं चेड़ी
 सरणै तोरै हो प्री० । कां मन कोई वीजै तुम्हने देखी मन रींभै हो प्री० ॥ ११ ॥ वालहे सर तुं २१
 मन माहरै बलिहारी प्रीतम ताहरै हो प्री० । ए निश्चै सुभ जोवौ होणहार ऊवै तेहोवो हो
 प्री० ॥ १२ ॥ सोलमी ढाल सुहावै जिन हर्ष सऊ सुप पावै हो प्री० । दूहा । सतीसिरोमणि

मनि सुदृढ निरमल सील सुहाइ । इकतारी इमराषतां अनुक्रमिरयण विहाय ॥१॥ प्रहविहसी
पूरवदिसै उदयथयौ आदीत । मानुं मयणा सुन्दरी देखे वा सुप्रवीत ॥ २ ॥ चिज्जं दिसि चि-
डोया चहचही बोल्या प्रंपी वृन्द । मानुं मयणानै कहै चिरंजीव चिरंनन्द ॥ ३ ॥ मयणा
वयण कहै हिवै सुनि प्रीतम सुसनेह । जईयै उलट भावसु श्रीरिस हेसरगेह ॥ ४ ॥ मयणा
जम्बर आवीया बद्यारिषभ जिणंद । मयणा स्तुति इणपरि करै हीहडै धर आणंद ॥ ५ ॥ ढाल
१७ आदरि जीव क्षमागुण आदर एहनौ ॥ जय जय रिषभ जिणेशरसाहिब सिव संपति-
दातारजी । नामयकी नवनिधि सिद्धि लहीयै त्रिभुवन जन आधारजी ॥ १ ॥ ज० तुं करुणा
सागर गुणआगर महीयल महिमावन्तजी । सुर नर नायक पाय नमै नित दंसण नाण

अनन्तजी ॥ २ ॥ ज० अजर अमर अविचल अविनासी न लहै कोई सरूपजी । जोतीरूप
 अरूपी अरिहन्त त्रिभुवननाथ अनूपजी ॥ ३ ॥ ज० सयंभूरमण बिज्जलकीरा संख्या कहै कोई
 तासजी । तुम्ह गुण संख्या न लहै कोई जो सारद सुष वासजी ॥ ४ ॥ ज० तुं परतिषि सुरतर
 अवतारी बलिहारी तुम्ह नामजी । तुं सज्ज जन्तुतणौ उपगारी भवभ्रमतां विश्रामजी ॥ ५ ॥
 ज० तुम्ह नामै पांमै वंछित फल तुम्ह नामै बज्जबुद्धिजी । तुम्ह नामै लह्यै जस निरमल तुम्ह
 नामै कुलसुद्धिजी ॥ ६ ॥ ज० सक्र चक्रधर पदवी लह्यै तिणमै किसौ विचारजी । मोक्ष २२
 तणी पदवीनो दाता तुम्ह गुण अधिक अपारजी ॥ ७ ॥ ज० बोधबीज तुम्हयी पांमीजै तुम्हयी
 लह्यै धर्मजी । लवधि सिद्धि तुम्ह नामै थायै तूटै सगला कर्मजी ॥ ८ ॥ ज० ताहरौ ज्यौति

सकल विभवनमै गावै सगला सन्तजी । केवल ग्यांन करीनै देषै लोकालोक अनन्तजी ॥ ९ ॥
ज० रोग सोग तुम्ह नामै नासै तुम्ह नामे सृष्टिजी । तुम्ह नामे लहै काया निरमल तुम्ह नामे
रिद्धि दृष्टिजी ॥ १० ॥ ज० आस्था पूरै चिन्तापूरै दूर गमै कलेशजी । पुन्यपसायै दरसन पाव्यौ
पाप गया सुविसेसजी ॥ ११ ॥ ज० मयणा दूखिपरि स्तवना कीधी भावभगति सुविसालजी ।
कहै जिन हर्ष थई एपूरी भली सतरमी ढालजी ज० ॥ १२ ॥ दूहा ॥ इम स्तवनां करतान्धकां
अन्तर भाव विसाल । जिन कंठैथी जकली कुसम माल ततकाल ॥ १ ॥ माला हाथै जकल्युं
जिन वर कर फलजाम । ऊम्बर मयणा बयणथी ते फललीधो ताम ॥ २ ॥ माला मयणा
संग्रही वचन कहै तिणवार । स्वामी ताहरा देहनौ रोगगयो निरधार ॥ ३ ॥ आपणसुं सुप्र

श्री० पा० च० पांमीय नवपद श्री नवकार भ० ॥ ११ ॥ स० अरिहंत १ सिद्ध २ सूर्यसह ३ उवभाया ४ सज्ज
 २४ साधि ५ भ० । दंसण ६ नांण ७ चरण वली ८ तप ९ नवपद आराधि भ० ॥ १२ ॥ स० मयणा
 नै मुनिवर कह्यौ नवपद नौ अधिकार भ० । ढाल अठारमी एतलै थई जिन हरष विचार भ० ॥ १३ ॥
 स० दूहा । ए नवपद संपद दियण उद्धारण तयलोय । जिन सासन नौ सारण एथी चिंतित
 होइ ॥ १ ॥ मंत यंच एथी अधिक कोई नही संसार । कल्पहुछथी एअधिक भव भव सुष-
 दातार ॥ २ ॥ जे सीधा जे सीभि स्यै सीभैछै वलेजेह । ते नवपदना ध्यांनथी ए मां नही संदेह २४
 ॥ ३ ॥ ढाल १६ चतुर सनेही मोहनां ॥ नवपद महिमा सांभलौ ए सम अवरन कोईरे । एहनी
 मोटि मम हियलै दिन दिन अधिकी होइ रे ए० ॥ १ ॥ ए नवपद थी नीपजै सिद्धिचक्र सुवि-

धारो रे। सकल सिद्धिदायक कछ्यौ ज्ञानी साल्ल ममारो रे ए० ॥ २ ॥ चौबीस जिन थापीयै
षोडश विद्यादेवीरे। सासनदेवी देवता ग्रहंगणउ चितठवेवीरे ए० ॥ ३ ॥ षेवपाल दिगपालजे
सपरिवार थापीजैरे। यंत्रकरी विधि पूजीयै तनुबंधित फललीजैरे ए० ॥ ४ ॥ उत्तम तपसंज
मधरी विणयोग थिर रापीरे। निरमल ध्यान धरी करी ध्यावै जिनवर सापीरे ए० ॥ ५ ॥ थायै
ततपिण निर्जरा अनुक्रम केवल लहीयै रे। मोक्ष एहना जापथी करम कठिन नरदहीयै रे ए०
॥ ६ ॥ संसारी सुपपिण सह लहीयै एहनै जापै रे। भवभवना पातिककीया पांणी बलि मां
कापैरे ए० ॥ ७ ॥ पुरुषोत्तम तुम्हनै कछ्यौ एसिधचक्र सरूपोरे। समता रस मनमाधरी ए
आराधि अनूपोरे ए० ॥ ८ ॥ निरमल सीलधरी करी मन पर द्रोह निवारीरे। सुजस सभावै

विस्तरे जायै एह जयकारीरे ए० ॥ ८ ॥ आसू चैदसातिमथकी आंविलकरि नवदिवसोरे । अष्ट
 प्रकारे पूजीये ध्यानधरी जगदीसोरे ए० ॥ १० ॥ पञ्चाशत पूजाकरै नवमै दिन मनरङ्गोरे ।
 पचषै आंविल गुरुमुखै पांमै सुष्य अभंगोरे ए० ॥ ११ ॥ ढाल कहौ उगणीसमी सिद्धचक्र अधि-
 कारोरे । मयणा सुष लहिस्यै हिवै कहै जिन हर्ष अपारोरे ए० ॥ १२ ॥ दूहा ॥ नवओली
 आंविलकीयां पूरो ए तप होइ । जजमणु उचित करै पांमै नवनिधि सोइ ॥ १ ॥ मयणा कहै
 करजोड़िनै भगवन पूछु तुम्ह । जजमणानी विधि कहौ समझावीनै सुम्ह ॥ २ ॥ मुनि कहै २५
 सांभलि आविका एहनी विधिछै भूरि । नाममात्र तुम्हनै कहु पामिस सुषभरपूरि ॥ ३ ॥ ढाल
 २० आश्रव कारण एजगजांणीयै एहनी ॥ तपजजमणौ रे । मुनिवर दाषवै मयणानै हित

आंणि । तपफल ऊजमणाथी पांभीयै पूरण तप सुप्रमाण त० ॥ १ ॥ आलि प्रमुख पञ्चवरण
तणावणा ठोवै धान पधान । सिद्धचक्रनी तिहांकरै थांपना धारी निरमल ध्यान त० ॥ २ ॥
अरिहन्तादिक नवपद आगलै ठावै ओफल गोल । गौष्टत उज्जल पंडमिश्रत करी जेथी होइ
रङ्गरोलि त० ॥ ३ ॥ अरिहन्त पद धवलो गोलो ठवै कर्कतन अठरयण । चोवीस हीरा रेवली
मांहे ठवै वंछित सम्पति लेण त० ॥ ४ ॥ सिद्ध पदै इकवीस प्रवालडा रातामाणिक अष्ट ।
रक्तचन्दन लेपति गोलिकधरै टलै उपद्रव कष्ट त० ॥ ५ ॥ पञ्चमणो गोमेद छत्रीसनो सूरि पदै
ठावै गोल । पञ्चवीस ठावै पाठक पदै नीलरतननीरे ओल त० ॥ ६ ॥ रिष्ट रतन सगवीसे
सुनिपदै सतसठ एकावन्त । सित्तरिनै पञ्चास उलाससुं सुगतासेस सुमन्त त० ॥ ७ ॥ निज

निज वरणरे वस्त्रादिक ठवै नवपदतणै समेलि । प्राजा दो ठारे नुकतीलाडुआ भाभी साकर
 भेलि त० ॥ ८ ॥ पारिक पुरमारे द्राघ सोपारीयां निमजानै नालेर । इत्यादिक नव नव आ-
 गलि धरै घामै मोटिममेर त० ॥ ९ ॥ इम ऊजमणौ रे मनरङ्गै करे आंणी भावविसाल । कहै
 जिन हर्ष लहै सिव सम्पदा एयई वीसमी ढाल त० ॥ १० ॥ दूहा ॥ इण परिजे ए तप करै दुष्ट
 कुष्ट क्षय घास । रोग सोग दालिद्र दुष थाय सज्जनो नास ॥ १ ॥ दोहा गिणि वंध्यापणौ विस
 कन्यादिक दोष । स्त्रीनै एथायै नही पुण्यतणौ होइ पोष ॥ २ ॥ सिंध भणी गुरु उपदिश्युं ए २६
 नर लक्षणवन्त । जिन शासन दीपाविस्थै भगति करौ मनप्रन्ति ॥ ३ ॥ सातषेव जिनवर कछ्या
 प्राविक पुण्य पवित । साते सचवायै सही साहमी भगति विचित्र ॥ ४ ॥ इमनि सुणी सज्जको

कहे ऊंवर भगति अपार । रहिवा मन्दिर आपीया धणकण कञ्चन सार ॥ ५ ॥ दूहा ॥ ढाल
२१ सोभितरो सिरदार एहनो ॥ हिवै उम्बर निज नारि वयण मनमांधरीहो लाल व० । सदे
गुरु हितउपदेस हीयामै अमुसरोहो लाल ही० । सिद्ध चक्र पूजा सीषी गुरुसानिधे होलाल
सी० । जाणै बुद्धिप्रमाण सुजाण भलीविधै होलाल सु० ॥ १ ॥ आव्यौ आसूमास महरत सुभ-
दिने होलाल म० । सिद्ध चक्रनो तप आरंभ्यौ सुभमने होलाल आ० । तिम मन वचन प्रवित्र
करी जिन मन्दिरै होलाल क० । पूजा श्रीजिन राय-अपाय दूरै करे होलाल अ० ॥ २ ॥ सिद्ध
चक्रनी पूजकि आठि प्रकारनी होलाल कि० । मयणा-उम्बर दोढ़ करै विस्तारनी होलाल
क० । आविल नोपच खाण करै मनउ मही होलाल क० । सुगुरु वचन प्रमाण हीयामै गह

गही होलाल ही० ॥ ३ ॥ दिन दिन ओछी रोग ज्वै इण जापथी होलाल ज० । तूटै करम
 कठोर विछूटै पापथी होलाल वि० । नवमै दिस विसेस न्हवण पञ्चामृतै होलाल न्ह० । सिद्ध
 चक्रनी पूज रचै सुमन ससितै होलाल र० ॥ ४ ॥ स्नान करी मनरङ्ग न्हवण जल छांठीछ्यौ हो
 लाल न्ह० । रोग गयो ततकाल नीरोगी तन थयो होलाल नी० । जांणे रतिपति रूप अनूप
 विराजीयो होलाल अ० । नवपद महिमा अधिक जगत मांगाजीयौ होलाल ज० ॥ ५ ॥ सिद्ध
 चक्रनै न्हवण अवर सज्ज रोगीया होलाल अ० । कञ्चण वरणी देह थया नीरोगीया होलाल २७
 थ० । मयणा पतिनो रूप निहाली इम कहै होलाल नि० । गुरुनौ ए उपगार सुजस महीयल
 लहै होलाल सु० ॥ ६ ॥ जंवरदेव कुमार सरूपै आगलौ होलाल स० । सज्जना टलीया रोग

धरम थयो ऊजलो होलाल ध० । फलीय मनोरथ माल कुमर मयणा तणी होलाल कु० । की
रति याधो लोक मभारि वणु वणी होलाल म० ॥ ७ ॥ महिमा श्रीजिन धर्म सुगुरुनौ निरधीयो
होलाल सु० । देव धरम गुरु भक्ति उजमणौ तिमकीयो होलाल उ० । जिन गृहथी इक दिव
स नीसर्या दम्पती होलाल नी० । सांही आवि नारि ओलपी सुभमती होलाल ओ० ॥ ८ ॥
पायें लागै ताम कुमरहरपै करी होलाल कु० । हीयडै हेज अपार सजल आंघ्यां भरी होलाल
स० । मायडी पुत्र वियोग सुंवेदन उपसमी होलाल सुं० । ढाल थई जिन हर्ष कहै इकवीसमी
होलाल क० ॥ ९ ॥ दूहा ॥ कुमर कहै सुण मातजी वज्रदिवसे मिली याह । जमाहौ सफलौ
वयो दुपदोहगटलीयाह ॥ १ ॥ मयणा सासू जाणिनै पायपडी तिणवार । माता तुम्ह वज्र

अरथकी ऊँ नीरोग विचार ॥ २ ॥ माय कहै बज्जअर सहित जीव कोड़ि वरोस । अविचल
 जोड़ी तुम तणी इम दीधी आसीस ॥ ३ ॥ आलिंगन देई करी पूछै कुसल सरीर । माता तुम्ह
 परसादथी ऊँ थयौ आसस धीर ॥ ४ ॥ इतला दिवस किहांऊता मात कहौ सुम्ह वात । जणणी
 कहै सुत आगलै पूरवला अवदात ॥ ५ ॥ ढाल २२ म्हांरौ लालपोथै रङ्गछोतरा एछनी । तुम्हने
 पूछी पुत्रऊंचली उज्जेणी थीको संबो पज्जतीरे । मुनिवर दीठौ एकदेहरै बांटी मनमांगह
 गहतीरे तु० ॥ २ ॥ मै दाष्यं मुनिवरनै एहवुं इण नगरी बैद्यनो वासोरे । आवी पुत्र रोग
 पड़ी गणौ पूछेवातेहनो पासोरे तु० ॥ २ ॥ भगवन कहौ पुत्र कह्यै ऊँस्यै निराबाध मुनि २८
 तब भाषैरे । तुम्ह सुत कोठी टोलै भिल्यौ निजनाथ करीनै राषैरे तु० ॥ ३ ॥ उस्वर रांणा नामै

कछ्यौ परण्यौ मालवपति बेटोरे । मयणा सुंदर नामै भली सीलवन्ती गुणपेटोरे तु० ॥ ४ ॥ सद
 गुरु वचनै दम्पती भावे सिद्ध चक्र आराधैरे । कञ्चण वरणी काया थई निजधर्म भली परि-
 पालैरे तु० ॥ ५ ॥ उज्जैणी मै सुषसुं रहै इमथई सुणि हर्ष सनाथोरे । इहा आवीज्जं मिलि
 वाभणी तुम्हनै दीठौ बज्ज साथोरे तु० ॥ ६ ॥ सासू बहूपुत्र सुपै रहै करता जिन धर्म उमैदेरे ।
 इकदिन जिनवर पूजाकरी अंग अग्रभली बिज्जं भेदैरे तु० ॥ ७ ॥ एहवै अवसर हिवै सांभलौ
 मयणा सुन्दरीनी मातारे । राणी रूप सुन्दरी गुणभरी नृपसुं रीसावी जातारे तु० ॥ ८ ॥ जई
 बैठी निज भार्द घरे पुन्यपाल कृपाल कहावेरे । दुष सोक घणौ मनमां करे मयणा विणिषिण
 न सुहावेरे तु० ॥ ९ ॥ कित लेकी दिवसे दुषतजी जिन धर्म करै मनरंगैरे । आवी जिनवर

दरसण भणी तव देषै कुमर सुरंगेरे तु० ॥ १० ॥ एतो अमर कुमर रूपै भलौ फिर फिर सामो
जोवैरे । जोतांर तिणि ओलषी एतौ यमणा पुत्री होवैरे तु० ॥ ११ ॥ पुत्री पासै कोई ए नवी
रांणी मनमांभरमांणीरे । जिन हर्ष कहै मऊ आगलै बावीसम ढाल वषाणीरे तु० ॥ १२ ॥
दूहा ॥ कोढ़ीपति छोड़ी करि अवर पुरुषसुं प्रीति । तजि आचार सती तणौ कीधो इणि
विवरीति ॥ १ ॥ एहवी एहन जांणीयै मयणा जिन मत जांणि । रजनीकरवा किमघटै दिवस
करैजे भांण ॥ २ ॥ अथवा वलीयो कर्मकै करमै दुरमति होइ । छुड़ा भूड़ास्युं करै पज्जचे २६
जोर न कोइ ॥ ३ ॥ कुल निकलंक कलंकोयौ जिन सासन दूषाय । पुत्री मूर्ख दुष नही पिण
दुष सच्यौ न जाइ ॥ ४ ॥ माता इणिपरि दुष करै मैणाकेडै वैसि । कांपै पुत्री कत अधम हियडां

मांहि पैसि ॥ ५ ॥ ढाल २३ ईढोणी चोरीरे एहनी ॥ मयणानि सुणी बोलडा मामोरीरे ।
सुंका आवी मनमांहि सुताऊं तोरीरे । चैत्यवन्दन पूजो करी मामोरीरे । वंद्या जिनवर उक्काहि
सुताऊं तोरीरे ॥ २ ॥ करवन्दन मायनै करी मामोरीरे । साभलि माहरा अवढात सुताऊं
तोरीरे । तुम्हनै दुष करबौ नही मामोरीरे । एहवी किमकरीयै वात सुताऊं तोरीरे ॥ २ ॥
साम्हौ हरप वधारीयै मामोरीरे । पुत्रीवर देपि सरीर सुताऊं तोरीरे । रोग गयौ जिन धर्मथी
मामोरीरे । मकरो मन दिलगीर सुताऊं तोरीरे ॥ ३ ॥ माठुं थायै नहीकदे मामोरीरे । तुम्ह
पुत्रीथी निरधार सुताऊं तोरीरे । पूरव तजि पश्चिम दिसै मामोरीरे । किमऊंगै कहौ दिन-
कार सुताऊं तोरीरे ॥ ४ ॥ अजीलगै छोडै नही मामोरीरे । सायर अपणी मरजाद सुताऊं

तोरीरे । हर्ष विनोद हीयै धरो मामोरीरे । परहरि मन विषवाद सुताज्ज' तोरीरे ॥ ५ ॥
 एहवै कुमरनी मायड़ी मामोरीरे । बोली सुष मीठी वांणि सुताज्ज' तोरीरे । सुभ सुत नोरोगी
 कीयो मामोरीरे । उत्तम गुणिनी प्रांणि सुताज्ज' तोरीरे ॥ ६ ॥ धन धनताहरी कूषड़ी मामोरीरे ।
 उपनी मयणा जिहां आय सुताज्ज' तोरीरे । सीलै सीता सारिषी मामोरीरे । इणमै षोड़िन
 काय सुताज्ज' तोरीरे ॥ ७ ॥ तुम सतबार्दे जगतमां मामोरीरे । निरमल पांम्यौ जसवास सुताज्ज'
 तोरीरे । सन्तितजेहनै एहवो मामोरीरे । जनम जीवित धनतास सुताज्ज' तोरीरे ॥ ८ ॥ ३०
 मिलीवै वाहिणि बेतिहां मामोरीरे । रूप सुन्दरि मिट्यौ सन्देह सुताज्ज' तोरीरे । धन धन मयणा
 सुन्दरी मामोरीरे । जिण पाल्यौ सील निरेह सुताज्ज' तोरीरे ॥ ९ ॥ निरमल कुलदीप वीयो

मामोरीरे । धरम उतार्यौ आल सुताऊं तोरीरे । कहै जिन हर्ष पूरी थई मामोरीरे ।
 एबेवीसमी ढाल सुताऊं तोरीरे ॥ १० ॥ दूहा ॥ रूप सुन्दर भयणा प्रतै पूछै धरीय सनेह
 तुभ पति नीरोगी थयो ते सुभ संभला बेह ॥ १ ॥ सावद्य देहरै बोलतां थायै निसही भंग ।
 सुभ घर जई कहिसुं सही चालो धरमन रंग ॥ २ ॥ मन्दिर आवी आपणै कही सगली बात ।
 सिद्धचक्र आविल तणौ ए महिमा विष्यात ॥ ३ ॥ कुमर तणो माता प्रतै पूछै भयणा माय ।
 वंसादिक तुन्ह पुत्रनौ वार्द सुभ सुणाय ॥ ४ ॥ ढाल २४ के केई वर लाधो एहनी ॥ हिवै कहै
 कुमरनी मायडी अंगदेस सुरंग विष्यात रे वेवाहिणि तुम्हे सुणौ । नगरी चम्पार तिहां अति
 भली नरि नारी सुपी दिन राति रे वेवा० ॥ १ ॥ सिंहरथ राजा तिहां राजीयो परजा पालै

सुतजैमरे । कमलप्रभा घटरागिणी कुंकण नृप वहिनी प्रेम रे वे० ॥ २ ॥ वज्र देवी देव आरा
धतां सुत जायौ रूपै कांमरे वे० । नृप लिषिमी लीलापामिख्यै श्रीपाल दीयौ तखु नांमरे वे०
॥ ३ ॥ सुत दोइ वरसनौ ते थयो राजा सूलै पीड़ाइ रे वे० । तिण रोगै नृत्यु लल्यौ सहो हाहा
रव नगरी थाइरे वे० ॥ ४ ॥ मतिसागर मन्त्री बुद्धि निलौ सै सब वय आपै राजरे वे० । श्री-
पाल भूपालनी आगन्या मन्त्रीस चलावै काजरे वे० ॥ ५ ॥ राजकरंताके ईक दिन थया काको
श्रीपालनो तासरे वे० । अजितसेन नांमै अछै राज्य लेवानौ थयौ कांमरे वे० ॥ ६ ॥ द्वेष धरै ३१
मन्त्री रायसुं सामन्त साथे करै भेदरे वे० । दोइ जणनै हणिवा कारणै करै मन्त्रणौ करिवा
छेदरे वे० ॥ ७ ॥ मन्त्री जांणी ते वातड़ी संभलावी सुभनै ते हरे वे० । मन्त्रीस्वर कहै रांणी

सुणौ जतने रापौ सुत ए हरे वे० ॥ ८ ॥ जीवस्यै तौ राजकुस्यै वली सुत एकज एदही दूधरे
वे० । तिण कारणि ए लेई करी जाओ तुम्हे आस्यालू धरे वे० ॥ ९ ॥ केडैथी अम्हे पिण जाइ
स्युं नाठां विण कुसल न होइरे वे० । मन्त्रीना वयण सुणी इसा नाठाजं नै सुत दोइरे वे० ॥
१० ॥ एकलडी ऊं रातै चली छानी न विजाणी के मरे वे० । नन्दन कडीए पन्थ चलिवुं कांटा
भागै पाएणरे वे० ॥ ११ ॥ धरती ऊंचो नीचो वणुं अथडाउं तन सुकमालरे वे० । दुप एक
हतो पति मरणनो राज्यभृष्ट थया सुत बालरे वे० ॥ १२ ॥ वयरी नौ भय मनमै घणौ दूम
चलता रात विहायरे वे० । एतलै थई ढाल चौबोसमी जिन हर्ष कही चित लाइरे वेवाहिणि
तुम्हे सुणौ ॥ १३ ॥ दूहा ॥ दुप भर दूण परिचालता नीठ थयौ परभात । कोठी नो टोलो

सबल आगलि एक दिषात ॥ १ ॥ कमला ते देषी करी अनसां थई भयभ्वांति । कड़ीए वालक
 एकली न लहै चितनें रांति । २ ॥ रोवै जोवै दहदिसै कोढ़ी करुणावन्त । दुपणी देषी मुक्त
 भणी पूछै सज्ज वृत्त ॥ ३ ॥ ए बन्धव सह ताहरा तुं अन्ह बहिन सरीप । प्छो वात कही
 सह आपी रूढ़ी सीष ॥ ४ ॥ ढालमांनांदरजणरी ॥ २५ ॥ देई दम आसासनारे निरभव
 कीधी जांम । वरवे सरिवैसारिनै ओढाड़ी अस्वर तांमरे । सांभलिज्यौ आगै वातरे जिस सीठी
 लागै ॥ १ ॥ भागैरे भागैरे अनना दुष दोहग भागै आंकणी दूग अवसर केडै धकोरे । आव्या ३२
 अरि असवार रोस भर्या आउ धधर्या मुष बोलंता मार माररे । सांभलि० ॥ २ ॥ पेड़ाने
 आवी कहेरे तुम्ह दीठी दूकनारि । पासै सुंदर दी करौ रूपै रतिपाति अवताररे । सांभलि०

॥ ३ ॥ पेडौ कहै तुम्हे साभलौ रे अम्ह पासैछै पाम । ते तुम्हनै आपु अम्हे आवै जो कोई
 कामरे । साभलि० ॥ ४ ॥ सुभटे जांण्यु रोगीयारे काई नदीसै पासि । इहांजभांजुगतौ नही
 रोग भय दूरै गया नासिरे । साभलि० ॥ ५ ॥ उम्बर रोगे पीडीयो रे अद्ग थयौ विदरद्ग । पुत्र
 पडी गणौ पूछती ऊँ गई कोसंवी द्रुद्धरे । साभलि० ॥ ६ ॥ तिहां जाईने लोकनै रे पूछ्यौ वेद्य
 नौ गेह । लोकसुपै सै साभल्यौ तीरथ भणी पज्जतो ते हरे । सांभलि० ॥ ७ ॥ ऊँ रही तिहां
 वासर घणारे जोती वैद्यनो वाट । साधु थकी सुधलही सहँ मननो मिटीयो जचाटरे । सांभ०
 ॥ ८ ॥ ऊँ आवी इहा पूछतीरे अद्गज मिलिवा काज । ऊँ कमला एमाहरो सुत जांण्यो
 सिरताजरे । सांभलि० ॥ ९ ॥ कमलाने वचने करीरे राणी थई निसंक । पुत्री गुणवन्ती सती

एहनै किम लागे कलङ्करे । सांभलि० ॥ १० ॥ निरषि जमाईसांमुहोरे नृपति न पांमै लेस ।
 मुझ पुत्रीनो जोईज्यौ फलीयो कांई भाग्य विसैसरे । सांभलि० ॥ ११ ॥ रूप सुन्दरि सुष पांमी
 योरे जलसीथा सह अङ्ग । ढाल थई पचवीसमो जिन हर्ष थया उछरङ्करे । सांभलिज्यौ आगे
 बातरे जिम मीठी लागै ॥ १२ ॥ दूहा ॥ पुन्यपालनै सज्ज कह्यौ रूपसुन्दरी जई गेह । मांमै
 तेड़ी निज घरे आण्याघणै सनेह ॥ १ ॥ सुन्दर मिन्दर आपीया आपी धननी कोड़ि । पञ्च
 विषय सुख भोगवै बेजण प्रेम सजोड़ि ॥ २ ॥ इक दिन राजा नीसर्यौ पासै कुमर आवास । ३३
 दीठी मयणा कुमरसुं करती विवध विलास ॥ ३ ॥ मयणा कोइ बीजौ कर्यौ सुंदरि पुरुष
 सरूप । कोढ़ी परिहरियो परौ इम मन चिन्तै भूप ॥ ४ ॥ पहिली क्रोध वसेण मै कांस अजुग

तो कीध । पीजो मयणा मयणवि लंछण सुभ कुलदीध ॥ ५ ॥ ढाल २६ पीछो लारी पाल
आरा दोइ सोरीयाहारा लाल एहनी ॥ पुन्यपाल ततकाल जणावै रायनै म्हांरा लाल ज० ।
भागे जीनी वात सह समभायनै म्हांरा लाल स० । आव्यो नृप आवास कुमरनै जमही म्हांरा
लाल क० । प्रणमै मयणा कुमरि चरण मन गह गही म्हांरा लाल च० ॥ १ ॥ लज्जावन्त निरन्द
कहै वार्ड सुणो म्हांरा लाल क० । मै तुभनै मतिहीण दीवौछै दुषवणौ म्हांरा लाल दी० । सुभ
अविनय अपराध असाध वीसारजे म्हांरा लाल अ० । उत्तम गुण गुणवन्त हीयामै धारिजे
म्हांरा लाल ही० ॥ २ ॥ मयणा विनय बहंत मधुर वयणै कहै म्हांरा लाल म० । दोसनको तुम्ह
तात करम फल मह लहै म्हांरा लाल क० । सुष दुष करम संयोग सऊ आवी मिलै म्हांरा० स० ।

करम मचा बलवन्त न टाल्यौ ही टलै म्हां० न० ॥ ३ ॥ इसजाणी तुम्है तात जिणे सरवर्मसुं
 म्हां० जि० । नवतत्व राचौ राय मराचौ भर्मसो म्हां० म० । इसनि सुणी नरनाथ धरम अङ्गी-
 कर्ग्यौ म्हां० ध० । अपकारै उपकार सुतातै आचर्यौ म्हां० सु० । वालीनै बलि विनय वहै गुण
 संग्रहै म्हां० व० । धर्मपमाडै जेह जगतमै जसलहै म्हां० ज० । कुमरी सख श्रीपाल जमाई निर-
 पीयौ म्हां० ज० । जलट अंगनमाइ हीयामै हरषीयौ म्हां० लाल ही० ॥ ५ ॥ कीधो वांको
 राय कछ्यौ थयौ पाधरौ म्हां० क० । मूगसांहे जाणे घीय दुल्यौ थयौ एघरौ म्हां० दु० । पुत्रीए ३४
 धनवन्त फल्यौ पुन्य एहनै म्हां० फ० । श्रीजिन धर्म पसाय थया सुप्र जेहनै हो लाल म्हां० थ० ॥ ६ ॥
 गजि जपरि आरोपि जमाई पुत्रिका म्हां० ज० । लेई गयौ निज गेह करो आराविका म्हां०

क० । गोरी गावै गोत नगारा वाजीया म्हा० न० । आडम्बर उक्ताह गुणीगण गाजीया म्हा०
 गु० ॥ ७ ॥ धणकण कञ्चण माल महल नृप आपीया म्हा० म० । सारी नगरी लाहि सुजस धिर
 थापीया म्हा० सु० । कुमर चढ्यौरे वाडी रमिवा किणि समै म्हा० र० । देखै लोक अपार सज्जनै
 मनगसै म्हा० सु० ॥ ८ ॥ पूछै माहो माहि कुमरि ऐ कुण अछै म्हा० कु० । एक कहै नृप धूय
 धणी बीजो नछै म्हा० ध० । वचन सुण्यौ श्रीपाल विछाय धयो धणु' म्हा० वि० । छावीसमी जिन
 हर्ष ढाल दूण परि भणु म्हा० ॥ ९ ॥ ढाल सर्व गाथा ४३६ ॥ दूहा ॥ रयवाडी जई आवीयो
 पिण मनसै दिलगीर । जननी पूछै आज तुं एहवो किमतुं वीर ॥ १ ॥ चिन्ता मनमांछे किसी
 पुत्र कहौ मुक्त तेह । चिन्ता कारण मायनै कुमर कहै ससनेह ॥ २ ॥ माहरे गुणेन ओलघै

कीधरे पर० ॥ ११ ॥ आदर करि तेडो गयो विद्याधर निज गेहरे । सोवन सिद्ध रसकुंपिका
 कुमर सहाज्य करे हरे पर० ॥ १२ ॥ गुण सांभलि जलतारिणी एक जड़ीछै ए हरे । बीजी
 शस्त्र निवारणी महिमा तास कहेहरे पर० ॥ १३ ॥ ढाल कही सत्तावीसमी वषता वरनर जे
 हरे । कहै जिन हर्ष जिहां तिहां सुषीयो थायै ते हरे पर० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ४५५ ॥ दूहा ॥
 कुमर भणी कृतधन कीयौ चाल्यौ सीष करेह । भरुअछ नयरै आवीयौ सुषसुं तिहां रहेह ॥ १५ ॥
 दूण अवसर हिवै तिण नगर धवलसेठ धनवन्त । पूरै प्रवहण पांचसै षरो धरी मनपन्ति ॥ १६ ॥ ३६
 सुभट सहसदस राषीया चौकी पौहरा काज । नृप आदेस लेई करी सुभमऊरत दिन साज
 ॥ १७ ॥ बलवा कुल देई करी वाहण पूर्या जांम । ठामथकीनविचातरै धवल चिन्तातुरतांम ॥ १८ ॥

ढाल २८ चरण करण धर सुनिवर वन्दीयै एहनी ॥ सेठै जई पूछीसीकोतरी ते कहै नर
 पलवंतो जो । पल आपै तौ उफवाहण चले बत्ती सलक्षण गुणवंतो जी से० ॥ १ ॥ सांभलि सेठ
 पुसी मनमा थयौ वीनवीयो जई रायो जी । स्वामो एक पुरुष सुभा दीजीयै बलि काजें सुष थायो
 जी से० ॥ २ ॥ राव कहै जे परदेसी ऊवै नर एकलडौ अनाथो जी । ते लेजे गाहरीछै आगन्या
 अवरमला एही थायो जी से० ॥ ३ ॥ सुभट धवलना फिरता जोवता दीठो तिछा श्रीपालो जी ।
 जाण्युं नरण परदेसी सही लक्षण अंग विसालो जी से० ॥ ४ ॥ सुभट कहै साभल परदेसीया
 आव्यो ताहरो कालो जी । धवल सेठ हणिस्यै बल कारणै रूठौ जिम विकरालो जी से० ॥ ५ ॥
 भूभे बलपालीसीपो कहै सुभट सुणेज्यो वातो जी । धवलतणी बलद्यौ चासुं डनै तेहनै करीयै

घातो जी से० ॥ ६ ॥ स्त्रीहतणी बलकदेन सांभली सीपो किस बल दीजै रे । धनधमीरौ रीसै
 थयौ रातड़ौ तुज रपरापरपीजै रे से० ॥ ७ ॥ अदिचारवो बोलौछो एहबुं ललिय्यो फल तत
 कालो जी । आवी लुभटे कुमरनै बीटीयो जदगाताजहराजो जी से० ॥ ८ ॥ धवल कहै पंडो
 बंड कीजोवै एहनै एहीजदंडो जी । वरसै तीर सडासुड अतिवला तो मारपडम जिहंडो जी
 से० ॥ ९ ॥ नालगोलानरडै गयणं गगौ सोगर गुरज अपारो जी । धनैचनै पोगस जैन डल्लवै
 दूम वाहै हथीयारो जी से० ॥ १० ॥ इणपरि जुड थयो अति आकरो धवल अनै घोपालो जी । ३७
 कहै जिन हर्ष पूरी थई एतलै अठावीसमी ढालो जी से० ॥ २२ ॥ सर्वसादा ४७० । दृश ।
 सुल न लागै कुमरनै जड़ीतणै परभाव । पिणि कुमरै सज्जना कीया नीसाकेस बभार ॥ २ ॥

प्रांण हण्णा नही केहना दयातणै भंडार । धवल विचारै चित्तमां देपी सकति अपार ॥ २ ॥
 बल छोडो जोडी कमल धवल कहै ग्रहिपाय । स्वामी वाहण किम चलै ते कहौ कोई ऊपाय ॥ ३ ॥
 कुमर चलावुं ऊं कहै जोधैलाप दीनार । आरत मीठी आपणी सेठ भण्यौ हाकार ॥ ४ ॥ धवल
 सहित वाहण चढ़ी नवपद जपि थई वाक । सोहतणी परगाजतौ सीपै मेलही हाक ॥ ५ ॥ ढाल
 २८ श्रेणिक मन अचिरिज थयौ एहनी ॥ ततपिण प्रवहण चालीया वाज्या भूंगल भेरी रे ।
 ताल नगारा वाजोया महिमा थई अधिकैरो रे ॥ १ ॥ लाषदीनार देई कहै तुम्है पिण ओलग-
 सारौ रे । वरसै स्युं लेस्यो तुम्है कीजे तेह विचारो रे ॥ २ ॥ सुभट सज्जल्यै जेटलौ तास जमल
 मुक्त दीजै रे । विपसी करि स्युं चाकरी माहरो मुजरो लीजै रे त० ॥ ३ ॥ सेठ कहैषप अन्है

नथी बैठोभाड़ौ देई रे। भरीयै दरीयै चालिया नमद हरष धरेई रे त० ॥ ४ ॥ रतन दीप भणी
 मं कीया आया बव्वर कलै रे। जलई धण लेवा भणी ऊतरीया तटमूलै रे त० ॥ ५ ॥ बव्वर
 रायै मोकल्या दांन लेवानै काजै रे। सेठगिणै नही तेहनै सुहड़तणै बलगाजै रे ॥ ६ ॥ बव्वर
 पतिनै वीनव्यौ आवीलागति मांगै रे। सेठ सुरीतैद्यै नही क्रोधा गनि तबजागै रे त० ॥ ७ ॥
 बव्वर पति सुहड़ां भणी हलकार्या जुधमंडो रे। सेठ सुहड़नासी गया कायर यथा बलकुंडौ
 रे त० ॥ ८ ॥ बव्वरपतिनी जय थई धवल सेठ बंधाणौ रे। कुमर कहै सज्जताहरा किहां गया ३८
 कुलगाणा रे त० ॥ ९ ॥ जं छोड़ाकुं उफभणी तौ सुभनै स्युं आपै रे। अरधमाल वाहसतशौ
 हाथो हाथै थापै रे त० ॥ १० ॥ बोल बंध लेई करौ विचि परमेसर दीधो रे। ढाल थई गुण

तीसरी कहै जिन हर्ष दूध कीधो रे त० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ४८६ । दूहा । तव धनु तूण
 धरी करी केडैधस्यौ कुमार । बोलाव्यौ महाकालनै जाइस किहां गिमार ॥ १ ॥ कायरजी
 पीगरजीयौ प्रिण माचरो बलजोइ । नासिम जाइ सिरा कज्युं जोऊं क्षत्री होइ ॥ २ ॥ वयण
 सुणी पावो बल्यौ मनमा नाण्यौ वीह । बापुकार्या किम रहै साहसीक नरसोह ॥ ३ ॥ कहै
 वयण दूध कुमरनै रेरे भोलावाल । सुभसौ जो कांकल करिस पामिस मरण अकाल ॥ ४ ॥ काइ
 मरै रे बालूया परकज्जै वेकाम । कुमर कहै मांटी अछै तौ करि सुभ सुं संग्राम ॥ ५ ॥ ढाल ३०
 चढ्योरिण भूभूवाचंड प्रद्योत नृप ॥ आवीयो ताम करि जोरि बलफोरतौ बव्वराधीस मन-
 रीस आंणी । सुभट थटविकट साथे करी आंपणा रोस चढीयो वदै असुभ वाणी आ० ॥ १ ॥

आविरे मूढ़जो रूढ़ मेलहै नही आज मृगराज सूतौ जगाड्यौ । धरण धूजावतो सामहो आवतौ
 छेह धरिलोह सुहडे उडाड्यौ आ० ॥ २ ॥ धरणि धड़धड़िय गड़गड़िय दमां मधुनि दहदिसे
 परवर्या सवलसूरा तुरंग भलथाषर्या सहस्र हाथे धर्या नाचता माचता रणसनूरा आ० ॥ ३ ॥
 बांण वरसै घणा सुहड़ हाथा तणां गयण रविरयणि अंधार कीधो । भाटभड़उवली सवलपांडां
 तणी कुमरनै जे प्रथमघाव दीधो आ० ॥ ४ ॥ भूभूतौ सलुदल सूड़करतौ प्रवल गाजतो गाज
 आवाज करतौ । केविकेवी हण्या सीस दूरै लुण्ठ्या अंग उछ रंग धरि जंग फिरतो आ० ॥ ५ ॥ ३६
 अधिक वाचाल मछराल श्रीपाल दूम घावघमसांण हैरांण कीधा । घावठामेरुहिर विंवधारा
 पड़े अरितणा जीवकण काढ़ि लीधा आ० ॥ ६ ॥ दूम लड्यो आयड्यौ कुमर अरसैन्य स्युं बधरा-

धीस ततकाल पाध्यों । वंदि करि आपणा साथ मै आखीयो सांमहो किण ही नवितोर सांध्यो
 आ० ॥ ७ ॥ धवल छोडावीयो कुमर बंधण थकी कोप करि षडग घरि राय केडे । मारि वासं-
 चर्यो सेठ वार्यो कुमर पांधीयो मारता सुजसफौडे आ० ॥ ८ ॥ राय महाकालनै अभय देई
 करी सहस दस धवलना सूहडसरा । जेहना ठाऊता कुजस आवीपता वृत्तिछेदी कीया सह
 दूरा आ० ॥ ९ ॥ कुमर राया सज्ज वृत्ति देई वर आढीसै पोतनो माल लीधो । एतलैए थई
 तीसमी ढाल तिमकांमजिन हरषए कुमर कीधो आ० ॥ १० ॥ सर्वगाथा पू० १ ॥ दूहा ॥ बज्जर
 नृप आदर करी कहै कुमरनैएम । पावन मुक्तपुर कीजीयै जिसबाधै मनप्रेम ॥ १ ॥ कुमर सकल
 परिवारसुं पज्जतौ नगर सभोर । प्रेमप्रीति हितसुं मिल्या बाधी प्रीति अपार ॥ २ ॥ करजोडी

राजा कहै मुभा कन्या गुणवन्त । मदनसेना नामै निपुण परणौ साहसवन्त ॥३॥ परदेशीनविश्रों
 लषैं न्यांति प्रांति कुलसील । अणजाण्यौ परणावतां थास्यै तुम्ह चोहील ॥ ४ ॥ नृप भापै
 अकारथी मै जाण्यौ कुलसुद्ध । तिण परणावु न्दीकरी थायै केमविरुद्ध ॥ ५ ॥ ढाल ३१ ढाल
 सुषनै मन कलडै एहनी ॥ परणी तिहां नृपकन्या जी सुषनै कारणै एतौ मदनसेना कृत
 गुण्या जी सुष० । मणिमाणिक सोवन दोधाजी सुष० । प्रीति राषण कुमरै लोधाजी सुष०
 ॥ १ ॥ नाटकना नव नव वृन्दाजी सुष० । आषा धरि अधिक आणन्दाजी सुष० । नृप साथि ४०
 थई बोलावैजी सुष० । हिवै प्रवहण जलनिधि चाल्याजी सुष० । कांई रतन दीप भणी माल्या
 जी सुष । वाहण जई दीप कतरैया जी सुष० । सज्ज लोक बिन्दर सञ्चरीयाजी सुष० ॥३॥

भला डेरा ताणि उतझाजी सु० । तिहा कुमर रहै सुपसद्दाजी सप० । इणि अवसर एक
नर आयोजी सु० । आदर देई बोलायोजी सु० ॥ ४ ॥ किहाथी आया किहां जास्यौ जी सु० ।
कोरि दीठी अजलतमासो जी सु० । ते पुरप कहै तिण ठांमैजी सु० । नयरी नर सज्जया नांसै
जी सु० ॥ ५ ॥ विद्याधरछै तिहा राजाजी सु० । कार्ड कनककेतु दिवाजाजी सु० । कनक
मान तसु राणीजी सु० । मयण मजुपा कन्या जांणीजी सु० ॥ ६ ॥ सकल कला गुण ग्याताजी
सु । जाणैसै ऋष घडी विधाताजी सु० । तिहां ऋषभदेवनो देहरोजी सु० । जांणै भूमिरमणि
सिरसेहरोजी सु० ॥ ७ ॥ विद्याधर राय सदार्द्रजी सु० । पूजै निज मन तन लार्द्रजी सु० ।
नृपकन्या पूजघणावैजी सु० । सज्ज देपीनै सपपावैजी सु० ॥ ८ ॥ इक दिन नृप पूजा दीठोजी,

सु० । राजानै लागै सीठोजी सु० । एसरिषो वर कोई जोऊं जी सु० । तेहनैए कन्या दोऊं
 जी सु० ॥ ९ ॥ इक दिन जिन पूजी कुमरीजी सु० । गुंभारा धोनीसरी कुमरीजी सु० । तत
 पिण बार जड़ाणाजी सु० । सज्जलोक थया हैरांणाजी सु० ॥ १० ॥ कुमरी कहै आतम निन्दा
 जी सु० । धिग धिग ऊं पापणि मन्दाजी सु० । सुभमे कोई दूषण दीसैजी सु० । आसातन
 विसवा वीसैजी सु० ॥ ११ ॥ इम दुष करि कन्या रोवैजी सु० । नृप कुमरी सनमुप जोवैजी
 सु० । राजा कहै सांभल बार्देजी सु० । तुं चिन्ता मकरिसि कार्देजी सु० ॥ १२ ॥ इहां दूषण
 तुभ नविकोई जी सु० । अ ॥ न तुभयो न विहोईजी सु० । एकलीसमी ढाल थई पूरीजी सु०
 जिन हर्ष कथाकै अधूरीजी सु० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा पू८६ ॥ दूहा ॥ राय कहै सांभलि सुता

दूहां दूपणछ मुझ । जिन गृहमा मनमै धरी चिन्तावरनी तुम् ॥ १ ॥ सावद्य ए आसातना
 तेह तणा फल जाणि । बारजडांणा एसही ते तलै थई सुरवाणि ॥ २ ॥ दोसन कोई कुमरि
 यह नरवर दोसन कोई । जिण कारण जिण हरजडिउ तंनि सुणौ सज्ज कोई ॥ ३ ॥ जसुनर
 दिष्टै होहिस्यै जिण हक मुक्त दुवार । सोइ ज मयण मंजूसि एह होएसै भरतार ॥ ४ ॥ सिरि
 रिस छे सरओलगणि ज्जं चञ्चेसरि देवि । मासम्भितरित सुनरह आणसु निश्चयलेवि ॥ ५ ॥ राज
 लोक सज्ज हरपिया आया सज्ज कोई गेह । दिन दिन आवी देहरै लोगराइ निरषेइ ॥ ६ ॥ ढाल
 ३१ मोरो मनमोह्यौ इण डूगरै एहनी ॥ आज दिन मसनौछे हलो जो हिवै तुम् थकी वार रे ।
 छवडै तौ मिली देवनी वाणि साचो निरधारि रे आ० ॥ १ ॥ कुमर असवार थई तिहा गयो

श्री० पा० च० ४२ साथि परिवार अपार रे । आवीया लोक नृपसुता हरष धर मनहमभारि रे आ० ॥ २ ॥ आवतां
तुरत जिन गृहतणा उघड्या भाटकि किमाड़ रे । कुमर जिनराय जुहारीया भगति बज्ज भांति
दिषाड़ि रे आ० ॥ ३ ॥ राइ मन लाइ देषी रह्यौ नृपसुता यई बसि प्रेम रे । देवि दाषित नर
एसही एह अमूलिक हेम रे आ० ॥ ४ ॥ राइ पूछै कहौ निज चरी ठांमनै नांम कुण गांम रे ।
कुमर चिंतै सुष आंपणै किम कज्जं वात निज नांम रे आ० ॥ ५ ॥ चैत्य जुहारिवा आवीयौ तेतलै
चारण साध रे । देव जुहारि बैठौ तिहां सुनिवर चित्तसमाधि रे आ० ॥ ६ ॥ धरम देसण नृप
सांभली नवपद नौ अधिकार रे । एहथी वंछित पांमीयै जेम श्रीपाल कुमार रे आ० ॥ ७ ॥
कवण श्रीपाल नरवर कहै एह बैठौ तुम्ह पास रे । चरित्र सज्ज पूछीया कुमरना सुनि कह्या

धरिय उलास रे आ० ॥ ८ ॥ राय कन्यावर एऊवै लेख्यै निज बापनौ राज रे । देवतणी गति
पामिस्यै बली लहिस्यै सिवराज रे आ० ॥ ९ ॥ इम कहौ मुनिवर पांगर्यौ नृपसुता कुमरनै दीध
रे । पाणिगृहण करी तिहा रहै सज्ज मनवंछित सीध रे आ० ॥ १० ॥ इक दिन कुमर राजा
बिन्है जिनवर भगति उदार रे । रंग मै भंग आव्यौ तिहां तेतलै नगर तलार रे आ० ॥ ११ ॥
ते कहै स्वामि अवधारीयै वणिक इक कपट नौ गेह रे । आंख भांगी प्रभुताहरी दांख चोरी
पड्यौ तेह रे आ० ॥ १२ ॥ तेहनै दंड स्युं आपीयै राय कहै हरौ प्राण रे । एतलै ढाल बलीसमी
थई जिन हर्ष प्रभांण रे आ० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ५३७ ! दूहा । कुमर कहै किम दीजीयै
जिन मंदिर आदेस । प्राणहरण पातिक वरण कुगतिहरण सुविसेस ॥ १ ॥ बंधन छोडा

वीकरी तेड़ाव्यौ नृपपासि । धवल सेठ साव्यातए ऐऐ लोभप्रकाश ॥ २ ॥ छोड़ा व्यौ तिहां सेठन
 कीधो तसु उपगार । पुन्यपसायै भोगवै दिन दिन सुपश्रीकार ॥ ३ ॥ कुमर चलाऊ हिव धयौ
 राय जणावी दात । बेटी कुमर चलावीया प्रवहण सभी विष्यात ॥ ४ ॥ लणि माणिक मोती
 घणा आष्यौ माल अपार । राय बोलावी कुमरनै सरि आव्यौ सुविचार ॥ ५ ॥ टाल ३३
 कंत तमाकू परिहरौ एहनी ॥ कुमर सेठ एक बाहणै बीजा बीजै पोत । मोरा लाल वै रमणी
 जाणै पदमणी ऊयर हीयौ उद्योत मो० ॥ १ ॥ कु० धवल अधस देषी करी चिंतै चित्त मभार ६३
 मो० । ए रिद्धि ए नारी लहो अपहरनै आकार मो० ॥ २ ॥ कु० विरह वियोगै आंकलौ अंतर
 व्याप्यौ दुष मो० । नयणी नावी नींदड़ी भागी विसनै भूष मो० ॥ ३ ॥ कु० चारि मित तेड़ी कहै

देपौ एहनी रिद्धि मो० । ए सुंदर दोइ सुंदरी इण पांमी नवनिद्धि मो० ॥४॥ कु० गुपत वात तुमे
रापि ज्यौ किणहि सकहि स्यौ गूम्ह मो० । एहनै नाथी जलधि मै एनारी द्यौ भूम्ह मो० ॥५॥ कु०
त्रिण जण सेठ भणी कहै एस्यं बोल्या बोल मो० । परउपगारी एहना गुणनो नही कोई मोल
मो० ॥ ६ ॥ कु० वाहण चलाव्या ताहरा कीधो तुम्ह उपगार मो० । विद्यावर महाकाल थो
छोडाव्यो तिणवार मो० ॥ ७ ॥ कु० ते गुण तुम्हनै वोसर्या इणि ऊपरि धर्यौ द्रोह मो० ।
दुरजन तुम्ह सरियो न को मिलनौ नाथ्यौ मोह मो० ॥ ८ ॥ कु० यतः । मैलावांका चालता
विपमय भीषण देह । पीरपावं ता पिणडसै सही दुजीहा तेह ॥ १ ॥ सह कडूआ अतिनीरसा
छाडै पूरव नेह । मलिन सभाव धरै सदा पल जाणीजै तेह ॥ २ ॥ सविसडसै विरसा मसै

फिरता सूँवै देह । अवसर ताकै आपणौ खान समाखल तेह ॥ ३ ॥ धोठा पिण भीठा सुषै
 परिणामै दुषहेत । मज्जरा परिते छाड़ीयै दुषरंजन दोष समेत ॥ ४ ॥ ढाल । कनधन तुं
 महापातकी तुम्हने पड़ौधिकार मो० । इस कहि बिण ऊठी गया एक रछ्यौ तिण वार मो० ॥ ६ ॥
 कु० ते कहै स्वामी सुणौ एहसुं केही बात मो० । गुण अवगुण न विजाणीयै कलीयै नही जसु
 धात मो० ॥ १० ॥ कु० ऊं सोषो कुं ताहरो अवरन सोषी कोइ भो० । काम करि सज्ज ताहरो
 जेछे सुभ थी होइ मो० ॥ ११ ॥ कु० भाग्य तुमारौ सेठजी बुद्धि हमाहरी जांणि मो० । यास्यै
 ढाल तेवीसमी कहै जिन हरष कल्याण मो० ॥ १२ ॥ कु० सर्वगाथा पूपू । दूहा ॥ धवल
 कहै धीरज धरी तुं सुभ वाल्हौ मिल । तुम्ह थी सज्ज सारुं ऊस्यै ताहरी बुद्धि विचित्र ॥ १ ॥

तेह कुबुद्धी इस कहै धवल भणी तिणि वार । करि ज्यौ प्रीति विसेष थी सीपा साथ विचार ॥ २ ॥
 मोठे वयणै रिंझवी उपजावै विसवास । जिम तिम दुसमण मारीयै थरु तेहना दास ॥ ३ ॥ कपट
 प्रीति कीजै प्रथम दीजै निज विसवास । अवसर पामी शत्रुनौ ततषिण कीजै नास ॥ ४ ॥ बुद्धि
 सीपवी धवल नै तिण पांभो मतिहीण । रलीयायत धवलौ थयौ जांण्यौ एह प्रवीण ॥ ५ ॥ ढाल
 मारु रागै जौरावल पुरुसामीस लहीयै एहनी ॥ धवल कहै हिव केलि अहोनिमि कुमर सुं
 रे । मन मै कपट धरंत हसतो ररे रमतो वयण दसा कहै रे ॥ १ ॥ तुझ सुष दीपी माहरी
 आंघडीया ठरै रे । हीयडो हरष भराय वालहा ररे तुझ विण माहरै किम सरै रे ॥ २ ॥ तुझ
 सुं लागी प्रीति अधिक मन माहरै रे । विण दीठां न सुहाइ माहरुं रे माहरुं मनहुं वस थयुं

ताहरै रे ॥ ३ ॥ भद्रक कुमर घरो करि जांण्यौ तेहनै रे । भेला रहै निसदीस कारज रे कारज
 पायै जेहसं जेहनै रे ॥ ४ ॥ निसि भरि सेठ कहै भाई सुणि माहरै रे । आवि दिपालुं प्याल
 जल मांरैर जलमांणस जाइतिर्या रे ॥ ५ ॥ सरल सभावी आव्यौ तुरत कुमर तिहां रे । सेठ
 कहै इणि डोर चढ़िनैरैर जोवो आवीनै इहां रे ॥ ६ ॥ जोवन्ता पापी कापी ते दोरड़ी रे ।
 जलधि पड्यौ श्रीपाल पड़तां रे रे नवपद जपीया तिण घड़ी रे ॥ ७ ॥ मगर मच्छ पूठै ते ध्यान
 थीरे । जल तारणी परमांण जलनारेर सङ्कट न ऊवै तेहथीरे ॥ ८ ॥ पाषलि सुभट वणा देपै ४५
 जागैतबै रे । विनय करी कहै तेह अमरनैरैर वसुपाल नृप मूंक्या अछैरे ॥ ९ ॥ तुरी पलांगी
 चाबक हाथे संग्रहौ रे । चढि चाल्यौ श्रीपाल वसुपालरेर राजा आव्यो सांमुहौ रे ॥ ११ ॥

ग्रासण वैसणदेई कुमर भणी कहैरे । अम्ह घर जोसी एक तेहनैरे२ पूछ्यौ कन्या कुण लहैरे ॥१२॥
मदनमञ्जरी नेटी सुभनै वालही रे । ए सरिघौ वर जोइ तौ सुभरैतौ सुभ मन आस्था पूगै
सहीरे ॥ १३ ॥ ढाल थई एतलै पूरी चोवीसमीरे । कहै जिन हरष निहाल चिन्तारे२ कुमर
तणी सगली गमीरे ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ५७४ ॥ दूहा ॥ सुदि दसमो वैसापनी पङ्कर पाछिले
जोइ । सायरतटि चंपातलै सूतो ते वर होइ ॥ १ ॥ वयण मिल्यौ जोसीतणौ परणौ कन्या
एह । लगन देई वसुपाल नृप परणाव्यौस सनेह ॥ २ ॥ राय कहै कोई काजल्यौ रापौ माह
रो मान । थई या यत कामो लोयौ राय अपावै पांन ॥ ३ ॥ धवल कुभरनै नापिनै मायामाडी
भूरि । रोजै पीटै सडसडै मनमा वाधरौ नूर ॥ ४ ॥ सीपा नारि भणी कह्यौ तुम्ह पति थयौ

श्रीपा०च० ४६ जलपात । जी नरहीं जगदीससुं प्रिण मित्र विना न सुहात ॥ ५ ॥ ठाल ३५ यत्तिनी राग
सोरठ ॥ प्रीऊर करि मयणा रोवै जूथभ्रष्ट मृगी परिजोवै । सांभलि प्रीतम गुणवन्ता अमची
कुण करिसी चिन्ता ॥ १ ॥ अधिविचि छोड़ी गयो अम्हने करुणा नांवी कांड तुम्हने । अम्हे
अबलाने एकलडी परमेसर अम्हने वीछुडवी ॥ २ ॥ दूहा ॥ विनडी देवै अम्ह भणी छोड़ी
प्रिउ निरधार । दुष सायर मांहे पडी किम पांसुं हिवै पार ॥ ३ ॥ चालि ॥ यामुं किण पर
दुष पार प्रीतम पाषै करतार । चोड़ी गयो नाहनवीनो हाहा गयो नाहनवीनो ॥ ४ ॥ हीय ४६
डाना दुष किण आगै कहीये कोई दुष न भागै । मनमोहन नाह मिलावै मुह मांगी वधाई
पावै ॥ ५ ॥ दूहा ॥ पावै अबला दुष घणौ बारहे सर करि सारि । किण सारूमेली गया एक

लडी निरधार ॥ ६ ॥ चालि ॥ निरधार कहौ किम कीजै प्रीतम विण केमरहीजै । दरीयौ
लागै दुपदार्ई ऊटयागत अधम कमार्ई ॥ ७ ॥ परभव केई पातक कोधा परतिष तेहना फल
लीधा । निरदोस परार्ई जार्ई छोडंता मंहिरन आर्ई ॥ ८ ॥ दूहो ॥ सहिरन आवी प्रीतमा
हे जनही मनमाहि । जो मनमां एहवु हतुं तौ चउंरी चढीयौ काइ ॥ ९ ॥ चालि ॥ चवरी
अमची तुं चढीयौ दक्षिणकर करसुं पकडीयो । ते बोलदीयो बीसारी परणी छोडो निरधारी
॥ १० ॥ वाट जोस्यै कमला माइडी आव्या छौविचमै छाडी अम्हनै इहा आणी नांपी भूरै
पंप विणि जिम पंपी ॥ ११ ॥ दूहा ॥ पंपो जिम विण पंपडी फोरी न सकै प्राण । प्रीतम
दरीया मै पड्यौ कीजै किसौ विनाण ॥ १२ ॥ चालि ॥ हिवनाण विनांण न सूझै छाती धड

हड़ इम धूजै । अन्ह थी दादुर गुण जाण पांणी सरजाजसु प्रांण ॥ १३ ॥ पीहर तौ पर गट
 रहीया प्रीतम विरहा गनि दहीया । प्रमदा इणि परिविलवन्ती दुष रोई राति गलन्ती ॥
 १४ ॥ दूहा ॥ राति गलन्ती तिमरड़ी पाहण फट्टै जेह । पिणि हीयड़ौ फाटो नही थयौ कठिन
 विरहेण ॥ १५ ॥ चालि ॥ प्रिय विरहवियोगै पीड़ौ वलिसेठ कुद्रिष्टै भीड़ौ । पांमै नही किमही
 थाग निज प्रीतमसुं बज्जराग ॥ १६ ॥ सतीयां निज सील सपाई तेहनै तौ चिन्तन कांई ।
 जिन हरषदेव वरदाई पांवीसमी ढाल सुहाई ॥ १७ ॥ सर्वगाथा पू८६ ॥ दूहा ॥ इम विल- ४७
 वन्ती सुन्दरी रोवन्ती नर हाइ । धवल अधरमी तिण समै भासै पासै आय ॥ १ ॥ हे सुन्दर
 तुम्हे सांभलौ मकरौ मनमै षेद । ऊं तुम्हनै सारी परै रापिसिषणै उमेद ॥ २ ॥ विधि विल-

सित अहिलो नही नही केहनो जोर । पिण मुक्त वयण मलोपि सो तुमनै करुं निहोर ॥ ३ ॥
 वयण मुग्गी मयणा विन्हे जाण्युं एहना काम । सायर मा प्रिउ नापीयो रही अबोली ताम ॥
 ४ ॥ ढाल ३६ वाणणि वाउली रे जसोटा फौजा पाक्की वालि एहनी ॥ इण अवसर गयणंगणै
 रे मिलोयो घनघोर अंधार देवि चक्के सरीरे । मयणानो वाहिरि आइजी धाई वाहर आई
 धाइनै लागीनही काईवार दे० ॥ पवनचिजं दिसि उपड्या सायर कलोल अपार दे० ॥ १ ॥ जल-
 निधिना जलऊमल्यारे ऊधाणचक्या असमा न दे० । वाहण लागोडोलिवा जांणे चंचल पींपल पांन
 दे० ॥ २ ॥ बीज भलामल भलहरै रे बीहावतोवाल गोपाल दे० । घोर अंधार करिजं नम्यौ
 जलधर वरसै असराल दे० ॥ ३ ॥ लोलकल्लोल हिलोलतो वाजै दधिगाजै पूर दे० । लोक सोक

श्रीपा० च० भय उपनौ कायरथयांसूरविनूर दे० ॥ ४ ॥ षांडाहत्यउभैरवो करडमरूनै डाक दे० । तिण
४८ अवसर प्रगळ्यौ तिहां आव्यौ मारंतौ हाक दे० ॥ ५ ॥ मांणभद्र बीजो वली पूरणभद्र कपिल
सरौर दे० । पिङ्गल चोथो दीषीयौ रे सिद्धचक्र नाच्यारे वीर दे० ॥ ६ ॥ मोगर हाथे साहिया
अन्याई करै चकचूर दे० । सेवक श्रीजिन रायना प्रगळ्य जांणै अंकूर दे० ॥ ७ ॥ कुमद अंजण
वलीवामणौ पुष्पदन्त चौथौ सुरनांम दे० । दण्डधरा अति आकरा पड्डीहार च्यारे अभिरांम
दे० ॥ ८ ॥ हाथे चक्र भमाडती भलकन्त अत्यन्त उद्योत दे० । वयण दसा सुप भाषती प्रग- ४८
टीच केसरिनी जोति दे० ॥ ९ ॥ रे रे वीर एहनै ग्रहौ दुरबुध प्रथम दण दीध दे० । ए पापी
हणिवौ सही अनरथ जिण ए हवो कीध दे० ॥ १० ॥ वीरे भाली बांधीयो अवलंब्यो कूवाथंभ

दे० । ऊधे सुप दुषीयौ कीयौ हणीयौ फल पाय्यौ दंभ दे० ॥ ११ ॥ भयै चकित धवलौ भणै
तुम सरणै मयणा माय दे० । राषि राषि मारण थकी मै भाल्या ताहरा पाय दे० ॥ १२ ॥ निज
गुण सांन्हो जीइज्यौ म्हाहरा अवगुण मनिहाल दे० । उत्तम गुणकारी ऊवै जिन हरष
छवीसमी ढाल दे० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ६१३ ॥ दृहा ॥ ताम चकेसरि इम भणै रे पापिष्ट अनिष्ट ।
मैं तुम्ह सुं क्यौ जोवतो मयणा सरणिपविष्ट ॥ १ ॥ दोइमणा करि जोडिनै भाषै विनय विसेण ।
सारकरी माता तुम्हे विसमै अवसर एण ॥ २ ॥ देवी वाक्यं । वच्छावल्लह तुम तणौ गिरुई रिद्धि
समेउ । मासम्भितर निच्छइण मिलस्यै धरौ मयेम ॥ ३ ॥ एम भणै विणु चक्रहरि परमल
गुणह विसाल । मयणह कण्ठै परिठवै सुरतरु कुसुमह माल ॥ ४ ॥ तुम्ह दुष्ट न देखिस्यै

मालह तणै प्रमाण । एम भणै विणु चक्रहरि देवि गर्ई नियठांण ॥ ५ ॥ ढाल ३७ ते मुक्त
 लिच्छामि दुक्कडं एहनी ॥ हिवै वाहण कुंकण जई जतरीया जाम । धवली भलो लेई भेटणौ
 भेद्यौ राजा तांम हि० ॥ १ ॥ राय घुसी थई सेठनै दिवरावै पांन । थईया यतनै ओलप्यौ थयौ
 हीयडै हैरांन हि० ॥ २ ॥ ए नीकल्यौ किम जीवतौ वैरी विकराल । वली मुक्त थी अधिको
 थयो हीयडै उठी भाल हि० ॥ ३ ॥ कोई जपाय करुहिवै जिमरुसै राय । एहनै जीव रहित
 करै भाव ठटलि जाय हि० ॥ ४ ॥ डुम्बकटुव आव्यौ तिहां सेठ आदरदीध । कांम कछ्यौ करि ४६
 सुं अम्हे सवा लास धनलीध हि० ॥ ५ ॥ राय जमाई जो हणै धनद्यो सवाकोड़ि । डुम्ब भणै
 ए सोहिलुं कांम करिसुं दोड़ि हि० ॥ ६ ॥ रावलै डूबं जई करी गाया भला गीत । वली

विसेपै ते दिनै रीभरौ राय चीत हि० ॥ ७ ॥ नृप तूठो बीडा दीयै गायन न लीयन्त । राय
जमाई सैहथै लीउं जौ दीयन्त हि० ॥ ८ ॥ ऊकम दीयो श्रीपालनै वसुपाल नरिन्द । बीडा
टै वानै गयो नविजांणै फन्द हि० ॥ ९ ॥ गायन सज्ज दीपी करी सीपा कंठ बिलग्न । एकभणै
पुच ओलप्यौ इमरोबालग्न हि० ॥ १० ॥ एक कहै भार्द मिल्यौ बज्ज दिवसे आज । नारि
थई इकडूँवणी बैठी करि लाज हि० ॥ ११ ॥ माय थई माया करै रहि रहिहिवै पूत । भाली
बाहवै सारीयो वलीयो घर सूत हि० ॥ १२ ॥ राजा अचरिज पामीयो जोवो देव सरूप । ढाल
थई सैवीसमी जिन हर्ष अनूप हि० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ६३१ ॥ दूहा ॥ कोप चड्यौ राजा कहै
वाभण्डामु आज । एकन्या वरदापव्यौ गमी सज्जमै लाज ॥ १ ॥ वली नृप पूछै कुमरनै दाप

श्रीपा०च०

पू०

वीथै निज वंस । निजजीभै सीपौ कहै कुल कीजै न प्रसंस ॥ १ ॥ चतुरङ्गी सेना सभौ मण्डा
वौ भारथ । तिण वेला तुम्हे जाणि ज्यौ कुललहिस्थे सुभ हाथ ॥ ३ ॥ अथवा प्रवहण सांहिछै
दोइ नारी गुणवंत । कुललहिस्थै ते माहरो मिटस्थै मननी म्वन्ति ॥ ४ ॥ भूपति तेड़ी नारिवे
मंकी पुरुष प्रधान । आवी हीयडै ऊमही पूछै तब राजान ॥ ५ ॥ ढाल इट कोइ लोपरवत
धूधलीरे एहनी ॥ बोली तब विद्याधरी रेलो अङ्गदेस भूपालरे राजेसर । सिंहरथ राय कम
लातणौ रेलो ए नन्दन श्रीपालरे नरेसर ॥ १ ॥ वो० पूरब वात सह्र कहो रेलो एहनी कुंवे
अम्हे नारिरे न० । नृप सुणि अचिरिज पांसीयौ रेलो पांम्यौ चितचमकाररे न० ॥ २ ॥ वो०
ततषिण बांध्या डुम्बडारेलो दीधी मार अपार रे न० । ऊकम कीयौ हणि वातणो रेलो गा-

पू०

यन वोल्या तिण वाररे न० ॥ ३ ॥ बो० वांक अम्हारो को नथीरे लो सगपण पिण नही कोइ
रे न० । धवल अक्कै एक वाणीयो रेलो पापीमां धूरि होइरे न० ॥ ४ ॥ बो० धन आपी अम्हनै
वणो रेलो एह कराव्यो काजरे न० । षोटौ बोलीजै किसुं रेलो तुम्ह आगलि महाराजरे न०
॥ ५ ॥ बो० राय भर्यो रीसै वणु रेलो पाठवीया निज दूतरे न० । धवल भणी बांधी करीरेलो
लेवातुरतप हतरे न० ॥ ६ ॥ बो० बांह अण्ठो बांधिनै रेलो लायावेग तलाररे न० । वाहोबार
मलाविसोरेलो धवल तणै सिरधाररे न० ॥ ७ ॥ बो० मारन्तो छोडावीयो रेलो करुणा करि
थीपालरे न० । वछीया यत ए वाणीयो रेलो हणीयै किम भूपालरे न० ॥ ८ ॥ बो० बन्धन
थी छोडावीयो रेलो दिवराव्यो सनमानरे न० । सापुरस रीस धरै नही रेलो वलिन करै अलि

मांनरे न० ॥ ८ ॥ वो० विज्जं मयणा सुष भोगवै रेलो सुष गमता निसदीसरे न० । कुमर
 प्रताप निहालनै रेलो सेठ धरै मनरीसरे न० ॥ १० ॥ वो० कुमर सूतो भूमि सातमी रेलो वली
 मांड्यौ मनद्रोहरे न० । निसि भरि बांधो डोरडी रेलो मूकी चन्दन गोहरे न० ॥ ११ ॥ वो०
 हणिवा कुमर भणी चड्यौ रेलो पालीकर संबाहरे न० । पाली सहित पाछो पड्यौरे पूती
 होयडामाहिरे न० ॥ १२ ॥ वो० तंतपिण प्रांण तज्या तिहांरे लो धवल गयो जमलो करे न० ।
 देषी सज्ज कहै एहवौ रेलो पातिक नज्जवै फोकरे न० ॥ १३ ॥ वो० माठी करणी यो इणें रेलो ५१
 फलप्रांम्या ततकालरे न० । कहै जिन हर्ष भलै तलौ रेलो कहै अडवीसमी ढालरे न० ॥ १४ ॥
 वो० सर्वगाथा ६४८ ॥ दूहा ॥ क्रोध लोभ श्रीपालना मनमांनही लिगार । प्रेतकार्य करि धव

लनो कीधो डेम उपगार ॥ १ ॥ तेडीनै आसासना सेठ पुवनै दीध । पिता तणौ धन आपीयौ
लोका मै जसलीध ॥ २ ॥ कोसंबीसं प्रेडीयौ उत्तमनी ए रीति । धीरानीर जिमसा पुरस
पालै पूरी प्रीति ॥ ३ ॥ ढाल ३६ नणद लहे नण० चूडलै जोवन भिल रहियौ एहनी ॥ साजन
हो साजन दूक दिन रय बाडी गयौ सीपौ मनसै रङ्ग । साजन सेवक साथि लेई करी वैसी
चपल तुरङ्ग सा० ॥ १ ॥ पुन्यकथा तुम्हे सांभलौ पुन्यकीयां आणंद सा० । कष्टलै संपतिमिलै
जिम श्रीपाल नरिंद सा० ॥ २ ॥ पु० आगलि वनमां कतरूयौ दीठो सारथ वाह सा० । पूछ्यौ
कुमर कि हाथको आव्या किण पुर मांहि सा० ॥ ३ ॥ पु० अचिरिज कोई निहालीयौ कार्द
अपूरज बात सा० । तेह कहै कातीनै थकी आव्यो सुणि बडगात सा० ॥ ४ ॥ पु० इहां थकी

श्रीपा० च० सी जीयणै कुण्डल नगर वसन्त सा० । मकरकैतु राय रागिनी कमल तिला गुणवन्त सा० ॥ ५ ॥

५२ पु० गुण सुन्दरी तेहनो सुता विद्या रूप प्रसाद सा० । परणै नर ते सुभ भणी जीपै वीणावाद्
सा० ॥ ६ ॥ पु० नरपति नन्दन बल्ल मिल्या सीपै वीणा चाल सा० । वात इसी तिण नर कही
घर पुळतौ श्रीपाल सा० ॥ ७ ॥ पु० ते अचरिज जोइ वा भणी लागी मनसै पन्त सा० । भाव
धरी नवपद जपै तन मन करि एकन्त सा० ॥ ८ ॥ पु० नवपद भगत परतज थयौ श्रीविमलेश्वर
यज्ञ सा० । तूठौ सीपानै कहै सांगि २ वरदज सा० ॥ ९ ॥ पु० गुणरंज्यौ सीपा भणी औनै
निरमल हार सा० । पहिर्यौ कण्ठ मोहन करै जायै जिहां जांण हार सा० ॥ १० ॥ पु०
हार तणी महिमा कही सुरपुळतौ निज ठाण सा० । कुमर गयौ कुण्डलपुरै पहिरी हार सु-

जांण सा० ॥ ११ ॥ पु० रूप रच्यौ वामन तण्यौ गयौ आषाढा साज सा० । भणिवा पाठक तुम्ह
 कनै ऊं आय्यौ कुं आज सा० ॥ १२ ॥ पु० वीण कला सुष सीषवौ मुक्कने पिण छै ऊंस सा० ।
 राजि कुमरिनै रींभयुं नापु मगज विधुंस सा० ॥ १३ ॥ पु० नृप नन्दन हडर हस्या बोल्यो
 वामणसाच सा० । ऊंस करै वरिवा भणी किहा कञ्चण किहां काच सा० ॥ १४ ॥ पु० राय
 कुमर आवौ मिली माहरै पासै आस सा० । राजकुमर तेड्या सह सुभरोले वा काज सा० ॥
 १५ ॥ पु० वामण पिण साथै गयौ गुण सुन्दर आवास सा० । ढाल ए उगणचालीसमी कही
 जिन हरप उलास सा० ॥ १६ ॥ पु० सर्वगाथा हूँ ॥ दूहा ॥ वीणा सुर सज्जए कर्यौ तंत
 उतार्या राग । पिण किणहीना नादसुं कुमरी चित्तन लाग ॥ १ ॥ वीणा मागी वांमणै आषै

श्रीपा०च०

पू३

कुमर अचंभ । आरंभ कीधो नादनो थंभ्या सज्ज जिम थंभ ॥ २ ॥ सज्ज को देषी वामणो नृप
कन्या श्रीपाल । कुमरी वरवरि वा भणी कंठठवी वरमाल ॥ ३ ॥ रूप अनूप कीयो प्रगट
चम्पापति तिण वार । मकरकेतु मन हरषीयौ परणावीयो कुमार ॥ ४ ॥ आप्या कञ्चण
मणि रयण आप्या वर आवास । कुमरि तिहां सुख भोगवै वारुलील विलास ॥ ५ ॥ ढाल ४०
प्यारौ प्यारौ करती एहनी ॥ एक दिन रमिवा नीकलीयौ वाटै एक पंथी मिलीयौ । कु-
मरै परदेसी कलीयौ पूछै अचरिज अटकलीयौ हो लाल ॥ १ ॥ कहौ पंथी किहां जासौ
कहां थी आया मुक्त भासौ । दीठौ कोई तन्है तमासौ मुक्त आगलि तेह प्रकासौ हो लाल ५३
क० ॥ २ ॥ पंथी कहै चतुर सुजाण, कुंडनपुर नयर मंडाण । आव्यौ तिहां थी सुप्र-

माण जाय सज्ज पुरपय ठाण हो लाल क० ॥ ३ ॥ कणयापुर मांहे आयो राजा विजयसेन
कहायौ । राणी कनकमाला मनभायौ जिण पुन्य थकी सुष पायौ हो लाल क० ॥ ४ ॥ चैलोक्य
सुंदरी तसु बेटी जाणै रूपकला गुण पेटी । पासै रहै सुंदर बेटी मननी अरति जिण मेटी हो
लाल क० ॥ ५ ॥ कन्या थई जोवनवंती दीठी बापै मलपंती । वरजोग्य थई गुणवंती सरपै
पूगै मनपंती हो लाल क० ॥ ६ ॥ सयंवरा मंडप मंडाउं सह देसाधिप तेडाउ । द्रुण सरिषौ
जो वरपाउं तौ बेटी परणाउं हो लाल क० ॥ ७ ॥ इम चिंत विंचित्त मभारा मंडपरचीया
विस्तारा । जगमाहे नरसिरदारा आव्या लेई परवारा हो लाल क० ॥ ८ ॥ चीस जोयण इहां
थी थायै कालहे वरिस्थै मनभायै । सीपौ सांभलि तिहां जायै पंथौ जिम गयण पुलायै हो लाल

क० ॥ ९ ॥ कणयापुर मांहे आयौ धुंधानो रूप वणायौ । अचरिज देषण जमाह्यौ देषी
 मंडप सुषपायो होलाल क० ॥ १० ॥ प्रतिहार नद्यै पेसेवा हथसंकलो दीयो देपेवा । आयो जिन
 हरषवरेवा चाली समीढा कहेवा हो लाल क० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ६८४ ॥ दूहा ॥ पूठभाग जंचौ
 धणुं जरसां कडौ प्रदेश । जची नीचो नासिका माथै कपिला केस ॥ १ ॥ पूठै ठूवड कुवडौ
 मोटौ माथौ जास । दांत गदहडा सारिषा तेहवा दांत जजास ॥ २ ॥ कोढगली वांकी नली
 पिंजर नयन विसाल । लालपडै होठ लड़वडै इसो वणायौ गात ॥ ३ ॥ राजहंस समराजवी ५४
 बैठा करै कलोल । काग सरीषौ कुवडौ आवी जभोलोल ॥ ४ ॥ ढाल ४१ श्रीचंद्रा प्रभु प्राज्ञ-
 यौ रे एहनी ॥ कहौ धूधा नरपति कहौ रे किम जभा इहां आज रे । जिण कारण बैठा तुम्हे

रे ऊभौकु तिण काज रे क० ॥ १ ॥ छड छड हसीया राजवी रे रूपवण्यो वाह वाह रे । तुम्हु
 सरिपोयर किहा मिलै रे एह वा राजवीयां माहि रे क० ॥ २ ॥ कन्या नरवाहण चढी रे स्वय-
 म्वरकीधो प्रवेस रे । ढोलदमामा बाजीया रे सपर वणाया वेस रे क० ॥ ३ ॥ सीपानो रूप
 मलगो रे देपै कन्या तेह रे । प्रसुदित चित्तययौ धणु रे लागो निवडसनेहरे क० ॥ ४ ॥ तीपे
 नयणे ताडिनै रे जोवै वारंवार रे । चंवक लोहतणी परै रे मनमिलीयौ तिणवार रे क० ॥ ५ ॥
 प्रतीहारी आवीहि वैरे लाल बडीले हाथरे । सयंवर विचमै माजतीरे राजकुंअरिकरि साथि
 रे क० ॥ ६ ॥ राजवीयानै ओलपै रे जाणै देस विदेस रे । वंसतणी विरुदावली रे संभलावै
 , सुविसेस रे क० ॥ ७ ॥ छोडि चली सज्जराजवी रे जिमभाद्रवडै छांण रे । थंभापूतलीनै सुषैरे

देव तणीथईवांण रे क० ॥ ८ ॥ तथाहि ॥ यदि धन्यासि विज्ञासि जानासि च गुणान्तरं । तदैमं
 कुञ्जकाकारं दृणुवत्से नरोत्तमं ॥ ९ ॥ देवतणी वांणी सुणी रे कुञ्जगलै वरमाल रे । वाली
 कन्यायै वर्यो रे मूँकी सहू भूपालरे क० ॥ ९ ॥ धड़हड़ीया कोपै करोरे मांनी नरमूँ छालरे ।
 कहतारे रे कूबड़ा रे म्हेलिपरीवर माल रे क० ॥ १० ॥ मूक्यौ मूक्यौ जीवतौ रे नहीँतोमूँ का
 जमलोकं रे । राजसुतानै कारणै रे काँइसरै तुं फो करे क० ॥ ११ ॥ काँई अदेया राजवीरे काँइ
 वड़ोकरो रोसरै । रूप न पांम्यौ जोतुम्हे रे तो केहनो कहो दोसरै क० ॥ १२ ॥ नाकतणाम- ५५
 लनीपरै रे तुम्हनै तज्या दृणु बाल रे । आदर मांनदेईपणौ रे मुझ करछै ठवीमाल रे क० ॥ १३ ॥
 भाग्य बिना किमपांमीयै रे रायसुता सुकमाल रे । कहै जिन हर्ष मयीजिस्यौ रे इकताली समी

ढाल र क० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ७०२ दूहा ॥ एहवा वयण सुणीकरी भडभडीया भूपाल । मारो
 मारो कूबडो पाडील्यौ धरमाल ॥ १ ॥ इमकहि ऊया मारिवा पुधदिषाड्या हाथ । कायरथ-
 ईनासी गया मांडै कुण भारथ ॥ २ ॥ पुंघ पराक्रम देखिनै विजयसेन राजान । तब बोल्यौबक्क
 आंपणौ प्रगट करौ बलवान ॥ ३ ॥ रूपकीयौ निजमूलगौ जाणै अभिनव काम । राजा रलीया
 यतथयौ कुमरी समवरपांम ॥ ४ ॥ परणावी नृप अंगजा उच्छवकरी अपार । सुन्दर मिंदर
 आपीया रयण कयण सिणगार ॥ ५ ॥ सीपौवर सुन्दरपवर त्रैलोक्यसुन्दरी नारी । जोडी जोडी
 सारिपी ऊंसी ऊइ करतार ॥ ६ ॥ ढाल ४२ बालु'रे सवायौ वयरऊं आअणौ रे एहनी ॥ राय
 सभायै आव्यौ घर एकदा रे कहैनि सुणौ श्रीपाल । देवक पट्टण धणकंचण मर्यौ रे रायतिहां

श्रीपा.च. ५७ अथ विचक्षणा पठति ॥ अवर मर्भंषो आल २ । पुत्तलिका कथयति ॥ अरिहंतदेव सुसाज्ज गुरु
 धम्मदुदया विसाल । मन्तुत्तम नवकार पर अवरमर्भंषो आल ॥ २ ॥ प्रगुणा पठति । करज्ज
 सफल अप्पांण ३ । आराहो धुरिदेवगुरु द्यौसुंपत्तै दांण । तव संयम उवया रड़ो करज्ज सफल
 अप्पांण ॥ ३ ॥ निपुणा पठति । जित्तौ लिख्यौ निलाडि । रे मन अप्पो षंच करि चिंताजाल
 मयाडि । फलतित्तोहो पामीये जित्तो लिप्पौ निलाडि ॥ ४ ॥ ततो दक्षणा पठति । तसुतिज्ज अण-
 जिण दास ४ । अच्छि भवंतर संचियौ पुन्नसमग्गल जास । तसु बल तसु मैतसु सिरिय तसुतिज्ज
 अण जिण दास ॥ ५ ॥ कुमर समस्या पूरवी हरषी कुमरी चित्त । एवरसुभ पुन्यै मिल्यौ पूरव भवनौ
 मित्त ॥ ६ ॥ ढाल ४३ मोतीद्यौनै हमारो राजंदा मोतीद्यौनै एहनी ॥ राजा सुणिरीभौ चतुराई

एवरसरिपौ मिलीयौ बाई । जोज्यौ पुन्याईतणा फल जोज्यौ पुन्याई । पुन्याईएआवी मिलीयौ
 काण अकालै आबौ फलीयौ जो० । पंचसपी साथै नृपवाला सोपाकंठ ठवी वरमाला जो० ॥ १ ॥
 राजा परणावी निज कन्या लोकसह भाषै एधन्या जो० । पंचप्रकार विषय सुषविलसै पुन्यथकी
 आस्यासह फलिस्यै जो० ॥ २ ॥ भाटभणै आसीस मलीपरि चिरजीवौ महाराय कुमर वर जो०
 अचिरिज एक अपूरवदीठौ । कोल्लागपुररिद्धि समृद्धि अनीठौ जो० ॥ ३ ॥ राय पुरंदर जांणी
 पुरंदर रांणी विजयादे अतिसुंदर जो० । बेटी गुणपेटी जय सुन्दर रूपै अभिनव रति मति
 मन्दिर जो० ॥ ४ ॥ कुमरी प्रतीजाकरि रहि थिरता राधा वेधसाधे सोई भरता जो० । बाप
 कन्यानै कालतीडाव्या दिसि दिसिना देसाधिप आव्या जो० ॥ ५ ॥ पिणते किणही वेधन साव्यौ

श्रीपा० च० कुमरी मन उक्ताह बांध्यौ जो० । भाटभणीबहुदान देईनै कुमर चलयौ निजहार लेईनै जो० ॥ ६ ॥

५८ कोल्लागपुर जडीनै आयौ राधा वेधसभी सुष पायौ जो० । जय सुन्दरि कन्यावर धरीयौ राय
वीवाह सबल आचरीयौ जो० ॥ ७ ॥ दोइजणभीलै सुषसायरमै सरिषी जोड़िमिली निज करमै
जो० । तिण अवसर मामा तेड़ावै नरमेतहीनै पवर करा वै जो० ॥ ८ ॥ कुमरै पिण निजपुरष
पठाया नारी तेडण सैन्य बुलाया जो० । बंधु सहित सऊ सुन्दरि आइ सेना बहुत मिलोमन
भाई जो० ॥ ९ ॥ हयदल गयदल पयदल मिलीयौ चालंतां अहिपति सलसलीयौ जो० । सात-
सायरनो जल भलफलीयौ जायै किणही नहो बलकलीयौ जो० ॥ १० ॥ स्यांनपुरी नयरी जत- ५८
रीयौ मातुल निरषि हरषमन धरीयौ जो० । मामैकरि अभिषेक सुदिवसै राजा पददीधो मन

हरसै जो० ॥ ११ ॥ पुन्यपसायै लच्छा सुषसाजा श्रीश्रीपाल थयौ महाराजा जो० । त्वेताली
 समीठाल वपाणी कहै जिन हर्ष वषत नीसाणी जो० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ७३८ दूहा ॥ दसदि-
 सिकेरा राजवी आवीलागा पाय । हय गय कञ्चन मणिरयण लेई भेद्यौ राय ॥ १ ॥ हिवै
 श्रीपाल नरेसवर लेई सैन्य अपार । चाल्यौ उज्जेणी भणी मिलिवा जननी नारि ॥ २ ॥ वि-
 चिसोपारै पाटणै जई दीधौमेल्हाण । परदल आव्यौ जांणिनै राय मल्यौदीवांण ॥ ३ ॥ श्री
 श्रीपाल नरिन्दने आवीलागौ पाय । करजोडीनै बीनवै स्वामी करौपसाय ॥ ४ ॥ महीसेन नृपकुं-
 अरी डसीयौ अङ्ग भुयङ्ग । तिलक सुन्दरो विषभरी तिण दुषराय भयंग ॥ ५ ॥ समसाणैते
 लेगया दुषीपिडित भूपाल । तुम्ह मिलिवातिणिवासतै नाव्यौ अहो कृपाल ॥ ६ ॥ ढाल ४४

परदेसीयारमेरी अंघीया लगी एहनी ॥ परउपगारी साहसधीर समसाणै पौहतौ वड़वीर । उप
 गारी लालताकै पायनमीजै । नयणै सुषदेखालौ बाल एजीवाड़ी सज्ज तत काल उ० ॥ १ ॥ पायनमी
 जै ताकी सेवाकी जै उ० । आ० दीठीकन्या मृतक समांन महामंवनौ कीधो ध्यान उ० ॥ २ ॥ कुमरी
 कण्ठै ठवीयौ हार ततषिण बैठीथई तिणवार उ० । विष जतरियौ निरविष प्रांण वाज्या हरष
 तणा नीसाण उ० ॥ ३ ॥ राजा महीसेन हरष्यौ अपार भेटकरे मणिरयण भंडार उ० । पर
 णावी निजकन्यातेह तिलक सुन्दरी धणैसनेह उ० ॥ ४ ॥ देवतणी पर विलसै भोग पांप्प्यौ पुन्य
 तणै संजोग उ० । आणौ करिचाल्यौ श्रीपाल कटक सुभट दल बज्जल विसाल उ० ॥ ५ ॥ सैन्य
 चढाई कीध भूपाल चड़त नगारा थई करनाल उ० ॥ ६ ॥ देस देसना राय संजुत चलता माल

वमाहि पडुत्त उ० । उज्जेणी आयौ श्रीपाल चरसुष सांमलीयो भूपाल उ० ॥ ७ ॥ विणकण
कापड जलमाहे लोध गढ रोहो मालवपतिकीध उ० । सायर वींटीलंकाजेम उज्जेणी वींटीरह्यौ
तेम उ० ॥ ८ ॥ चिन्तातुर नगरीनो लोक अधिक उदासी रहै ससेक उ० । रातिपडी सबधयो
जमाल चाल्यौ मायमिलण श्रीपाल उ० ॥ ९ ॥ समरै निसिपतिजे मचकोर मेहागम जिमचाहै
मोर उ० । मधुकर आवै मालति दाइ मयण सुन्दरितिम अधिक सुहाइ उ० ॥ १० ॥ सज्ज अंते
उरतेडी साथि निर्भय यई पुज्जतो घरनाथ उ० । माइ उषाडौ मन्दिर बार तुम्ह सेवक जिम करै
जुहार उ० ॥ ११ ॥ उलसी मयण सुन्दरिनी देह बाई तुम्ह सुत सादजएह उ० । भटकिउ-
धार्याघरना बार मिलीया माय सुत विरह निवार उ० ॥ १२ ॥ लागी बहू सहू सासू पाय

श्रीपा० च०

६०

मयणासुं सगली मिली आय उ० । चमालीसमीठालै थयौ सुख कहै जिन हर्षटल्या सह दुख
उ० ॥ १३ ॥ दूहा ॥ राति रहीनिय मन्दिरै जाया जणणी लेय । आयौ दिन अणउ गतै निय
दल मांहि बलेह ॥ १ ॥ प्रात थयौ उगौ दिवस भाठ भणै कल्याण । सेनानी तेड़ाविनै भासै
इण परिवाणि ॥ २ ॥ दूत मोकलीवेगसुं राय करावौ जाण । कंधकुहाड़ै आयमिलि जो रापै
निजप्रांण ॥ ३ ॥ तौलसकर पाछै चलै रहै तांहरी मांस । आंणनमानै माहरी तौकरि सुभ
सुं संग्राम ॥ ४ ॥ सेनानी चर मौकल्यौ आव्यौ जिहां भूपाल । अन्हस्वामी बलीयौ हठी पर
तिष वयरी काल ॥ ५ ॥ कंधकुहाड़ौ करिमिलै तौ पाछौ बलै कटकि । नहितौ गढ ढंढोलिस्यै
लेस्यै नगर भटकि ॥ ६ ॥ ढाल ४५ बेबे मुनिवर विहरण प्रांगुर्या रेणहनी ॥ दूतवयणि सुणि

६०

उज्जैणी धणी रे मनमां कीधो एह विचार रे । सबलासुं बलमांडीनै दृथा रे कौण करावै लोक-
 संहार रे दू० ॥ १ ॥ कंध कुहाडौ करि अनीपती रे सनमुख आवीनै ततकाल रे । चतुर सम-
 यनौ जाण प्रवीण तीरे भैद्यौ महाराजा श्रीपाल रे दू० ॥ २ ॥ चंपापति आव्यौ तब सासुहौ रे
 सुसरानै दीधौ सनमान रे । कंध कुहाडो दूरनपावीयौ रे बैठ बैठा पासै राजान रे दू० ॥ ३ ॥
 संतोष्यौ सनमान्यौ बज्र परै रे मालवपति चिंतै मनमाहि रे । पार नदीसै एहनी रिद्धि नौ रे
 एहस्युं सरभर किम थाइ रे दू० ॥ ४ ॥ तात तुम्हे वर मुक्त दीधो जूतो रे ते परितिष जोज्यौ ए
 आज रे । कंध कुहाडौ जेण न पावीयौ रे ओखधि ज्यौ जंवर महाराज रे दू० ॥ ५ ॥ मालवपति
 सममा विस्वाय थयौ रे वपु वपु जोज्यौ अचरिज एह रे । पुन्यसरीपौ जग मै को नही रे एहने

ओपा० च० ६१ फलीयौ पुन्य अच्छेह रे दू० ॥ ६ ॥ सौपो मयणा निरषी हरषीया रे मिलिवा आव्या लेक अपार
रे। सोहग सुंदरिनै रूप सुंदरी रे मिलिवा आव्यौ सज्ज परिवार रे दू० ॥ ७ ॥ श्रीश्रीपाल नरेश
र तिणिसमै रे दीधौ नाटक नौ आदेस रे। नाटकहृन्द बलावौ माहरौ रे जोवै सज्ज नरनारि नरेश
रे दू० ॥ ८ ॥ नाटक आव्यौ तिहा मिलि नाचवा रे पहिरी सुंदर चरणाचीर रे। कसमसता
कांचू हीयै कस्या रे सोहै भूषण सयलसरी रे दू० ॥ ९ ॥ एक नारी लाजै साजै नही रे ते
विण न पड़ै नाटक रंग रे। माहो मांहे अबलाहाकनै रे उठाड़ी तेहनै मन भंग रे पु० ॥ १० ॥
नाटकणि पेठो ते नाचिवा रे जोवा मिलिया रांगो रांग रे। दूहौ एक कह्यौ तिण ६१
अवसरै रे मनमोहन सुष मधुरी वाणि रे दू० ॥ ११ ॥ दूहा। किहां मालव किहां संघपुर

किहां बम्बर किहां नट । सुरसुंदर नचावीयै देवै दल्या 'मरट ॥ १ ॥ जणणी 'बाप अवण
 दूहौ सुणी रे । कुंअरी मारचंतो नयणे-दूठ रे । 'नाटकणी थई सुरसुन्दरी रे स्युं कीधो
 देवै धीठ रे दू० ॥ २ ॥ 'सक को 'देपी मनविखाय थयौ रे है है जोवौ एहना कर्म रे ।
 ढाल थईए पैतालीसमी रे कहै जिन-हर्षषरौ जिन-धर्म रे ।' दू० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ७७ पूटूहा ॥
 सभामांहि जई कुमरिनै राणी कण्ठ विलग्न । — बाभ असंभम देषिनै दुषतरिरोवा लग्न ॥ १ ॥
 राइ सुतानै पूछीयौ एस्युं तूभ सकप । 'जोई परणाव्यौ ऊतौ तुभ मनमान्यौ भूप ॥ २ ॥ बल
 तू सुरसुन्दर कहै पिता सुनौ सुभवात । परणीचाली कंतसुं संपपुर नगर दिषात ॥ ३ ॥
 उतरीया तिहां जई करी रह्यावगड बज्जदीह ।- साथ सक धरमोकल्यौ बैठा रह्या अवीह ॥ ४ ॥

मारि मारि करती तिहां आवीधाड़ि अपार । नासिगयौ सुभनाहलौ सुभमेली निरधार ॥ ५ ॥
 तिहां भाली मुभकोलीए वेची जई नैपाल । मोलदेई मालणिग्रही तिणवेचो ततकाल ॥ ६ ॥
 इम वेचाती अनुक्रमै इक विणजारै लीध । बब्बर देसै जाइनै गणिकानै घरदीध ॥ ७ ॥ ग-
 णिका नाटकसीषव्यौ ऊं थई निपुण प्रवीण । नाटकिणी मांहि सरै कलाग्रही अकुलीण ॥ ८ ॥
 ढाल ४६ मोरा साहिवहो एहनी । हिव बब्बर होनायक महाकालिक नाटकनो रसीयौ सही ।
 वैस्यानै होधरि नाटक साथिकि तेड़ी तिणि सज्ज संग्रही हि० ॥ १ ॥ दिन दिन प्रतिहो नाटक ६२
 नवरंग कि राय करावै नवनवा । परणावीहो कन्या निज भूपकि मयणसेना सुपनालिवा हि०
 ॥ २ ॥ धण कंचण हो भूषण बज्जदीधकि मयणापति श्रीपालनै । दीधावली हो नवनाटक टुंद्-

कि साथे सुभ निहालिनै हि० ॥ ३ ॥ मैकीघाहौ नाटक बज्जवारकि मथणापति आगै षडी ।
 इहां देपीहो मायवाप कुटंबकि लज्या दुषसायर पडी हि० ॥ ४ ॥ परणावीहो आडम्बर भूरकि
 मानघणौ सुभ बापनौ । सुष सगलाहो फीटीथया दुषकि फलपांम्यौ मै पापनौ हि० ॥ ५ ॥ सुभ
 बहिनीहो मथणा धनधन्नकि एसरिषी जगकी नही । दुष मिटीयाहो सुषपाम्या एहकि सील-
 फल्यौ एहनै सही हि० ॥ ६ ॥ कुलथांपणि होऊं थई कुलमांहिकि सज्ज पाणि माहि पापणी ।
 मै सेव्यौ हो वज्जभांति कुसीलकि लही कमार्द्र आपणी हि० ॥ ७ ॥ सीदापुंहो सुभ कर्मनो
 वातकि तुम्ह आगलि हिबैऊं कज्ज । पातकनाहो पुन्यना माबापकि परतिषि फलदेषो सह
 हि० ॥ ८ ॥ ओपालै हो अरदमण कुमार कि तेडाव्यौ आदर करी । धण कंचण हो आपो भर

पूरि कि आपी वली सुरसुन्दरी हि० ॥ ९ ॥ सुरसुन्दरहो अरिदमण कुमार कि समकित पांम्यौ
 निरमलो । पूरवलीहो परथाप्यौ राय कि मति सागर मति जजलो हि० ॥ १० ॥ जे ऊँताहो
 कोठीसय सात कि रोग गमी ठाकुर कीया । मोटांनाहो जोवो उपगार कि निज सरिषा करिषा
 पीया हि० ॥ ११ ॥ नवरांणीहो पटराणी कीध कि शृङ्गार सुंदरीनी सघी । पांचे बलिहो चव-
 दै ए नारि कि विलसै अपहर सारिषा हि० ॥ १२ ॥ नीसाणेहो हिवंचलयो धाय कि चंपा ऊपरि
 चालीयो । जिन हषैहो एतलो अधिकार कि ढाल छैताली समीकीयो हि० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा
 ७८६ दूहा । कटका सुभट नाथट गरट मिलीया एका एक । सुसरा साला मावला रिणवा-
 वला अनेक ॥ १ ॥ रिणरसीया कसीया जरद पहिर्या टोप करीट । बगतर पहिर्या लोहमय

सांगे कालाकीट ॥ २ ॥ पापरीयाहै वर प्रबल मद भरता गजराज । गयणंगण छाये गिरद
 गोलानाल अवाज ॥ ३ ॥ इमचलतौ चंपापुरी आव्यौ नृप श्रीपाल । तडवायै नासीगयो अजित
 सेन ततकाल ॥ ४ ॥ राज लीयो निज भुजबलै बैठौ पितातपत्त । पामी परबल संपदा मोटोजा
 सनपत्त ॥ ५ ॥ लजाण्यौ राजा धनुं मन धरतौ विषवाद । नासतां माहरौ थयौ लोकांविच
 अपवाद ॥ ६ ॥ अजितसेन मन चीतवै हंछ्यौ द्रोहीवार । राजलीयौ भजीजनौ चीतवीयौ
 अपकार ॥ ७ ॥ गोवद्रोहपी जसनही नृपद्रोह नीत विणास । बालद्रोहपी गति नही त्रिगुहे
 करया अभ्यास ॥ ८ ॥ हिवै दिक्षानो आदहं पालू संयम सुद्ध । तो छूटूँ एपापपी तूटै करम
 निरुद्ध ॥ ९ ॥ इम सुभभाव विचारता चढतां मन परणांम । ज्ञाना वरण्यौ कर्मनो चयोपसम

થયો તાંમ ॥ ૧૦ ॥ ઢાલ ૪૭ હીડોલાની ॥ સુમભાવના મન ભાવતાં જાતી સ્મરણ હતપન્ન ।
 દૈવવસૈ લીયો સંજમ વિસદજાંણિ રતન્ન ॥ સુમતિ સૂધી ગુપતિ પાલે દોષ ટાલે દુષ્ટ । જમા
 સાગર નમત માગર ચતુર ચારિત્ર કરૈ પુષ્ટ ॥ ૧ ॥ ધન્નધન્ન માર્દે જે તજૈ દુષ્ટ પરિક્રોધ ॥ મહા
 ગ્યાંની મહાધ્યાની અમય દાંની જેહ । મવિકનૈ ઉપગાર કરતાં ચરણ કરણ ગુણગેહ ॥ વિચ-
 રતાં મૂલોક જપરિ અજિતસેન મુણિન્દ । આવીયા ચમ્પા નયર અનુક્રમિ લોકનૈ થયો આગન્દ
 થ૦ ॥ ૨ ॥ શ્રીપાલ સાંભલિ સુગુર આગમિ વાંદિવા મનરજ્જ । આવીયો આહસ્વરેં કરિ ભાવ
 ભવગતિ અમજ્જ ॥ પ્રદક્ષિણા ત્રિણહે દેહ વન્દી બેઠો આગલિ રાય । દેસના દુક ચિત્તનિ સુમૈ
 માષૈ મુનિવર માય થ૦ ॥ ૩ ॥ દોહિલોમાં નવ ચતુર ગતિ માંહિ મવતાં એહ । દેસ આરિજ

सुकुल उतपति सुगुरु सकलहेह । तत्त्वरुचि पिण दोहिली तिम श्रवण आगम वांणि । धर्म
उद्यम छोडि आलस सांनव करै सुष हाणि ध० ॥ ४ ॥ धर्म नो संजोग पांमी कीजीयै जिन धर्म
राज्य । लीला सकल सम्पति धर्मधी सिवधर्म देसणा मुनि राय दीधी ॥ सांभली चितलाय
रायहिवै श्रीपाल पृच्छै कहो ज्ञानी मुनि राय ध० ॥ ५ ॥ किणै करमै बालरोगी ऊवौ किमनी
रोग । रिद्धिपामो एतली किम डूबनो सयोग ॥ केमसायर पड्यौ कुसले नीकल्यौ कहौ केम ।
नारिपरण्यौ एह सुन्दरि न्यानी पूछ्यौ मुनि एम ध० ॥ ६ ॥ मुनि कहै सांभलि तुं नरेसर चतुर
गति संसार । जीव कर्म लहै सुप दुप जाणि जे निरधार ॥ करै जेहवा कर्म प्रांणी तेहवा
फल अन्त । तिण प्रं हिवै ताहरा नृप साभलि कर्मवृत्तन्त ध० ॥ ७ ॥ इणै भरतै हिरण्य पुरु

श्रीपा० च० वर सिरिकन्त नरेस । श्रीमती रांणी जगवषांणी दयापाल विसैस ॥ राइ आषेटक निरन्तर
६५ भमे हणिवा जीव । नारि कहै प्रिय जीव हणतां पांमीपै दुष अतीव ध० ॥ ८ ॥ बीहतानासै
विलासुषल्यै जचि न हणै तास । वारीयौ पिण कछ्यौ न करे व्यसन लागौ जास ॥ विंठ
लेई सातसै इक दिन आहेडै जाइ । गहन वनमै निजर पड़ीयौ घीणकाया मुनिराय ध० ॥ ९ ॥
हाथओघौ देषि राजा कहै चामर धार । कोई कोढी एहदीसै सज्ज कछ्यौ तिण वार ॥ यष्टि
मुष्टिकरीय ताड्यौ सातसै उल्लण्ड । साधुनै इम कष्टदीधौ चीकणी बांधी गण्ड ध० ॥ १० ॥ मुनि ६५
भणी उपसर्ग करिनै मृगहंणी सुष पाय । सात संयां वण्ड उलण्ड साथै आवीयौ घरराय ॥ वली
इक दिन गयौ मृगया एक लो नरनाह । नदी तटै इक साधु दीठौ नापीयौ सलिल अगाह

ध० ॥ ११ ॥ नदी मांछे देखि दुषियौ थयौ करुणावन्त । नदी जलथी काठीयौ मुनि सुमतिवन्त
महन्त ॥ कह्यौ निजकृति नारि आगै रागिनो कहै एम । अवर जीवन पीडीये तो पीडीये
मुनिवर केम ध० ॥ १२ ॥ साधुही लाहानि थायै हास्य रोगी जांणि । निन्दा थको बधबन्धना
बलि ताडणाकि पिछाणि ॥ इम सुणी कांई कह्यौ आयौ धर्मनौ परणांम । ढाल सैतालोस
मी एघई जिन हर्षतमांम ध० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ८१६ ॥ दूहा ॥ दिवसे कितले कैगए गोपै बैठौ
भूप । मलिभूपति कसकाय मुनि दीठौ एहवौ रूप ॥ १ ॥ सीष वयण गयौ वीसरी सेवकनै कहै
राय । नगरविटाल्यौ डूम्वडै कादो परौध काय ॥ २ ॥ तिण धुरषै तिमहीज कर्यौ थीमति
राणी दीठ । कोपकरी राजा प्रतै निमंछै धिगघोठ ॥ ३ ॥ साधु भणी किम नन्दौये जेगि रुआ

गुणवन्त । तारे अपना आत्मा परनै पिण तारन्त ॥ ४ ॥ ढाल ४८ धन२ श्रीरिषिराज अनाथी
 एहनी ॥ रांणीनै ओलंभै लाज्यौ एमै कीधो अकाजजी । बोधलता काथी पापीमे तेडाव्यो रिष
 राजजी रां० ॥ १ ॥ नमी प्रमावी कीधो स्तवना श्रीमती कहै करजोड़िजी । भगवन रायै तुम्हने
 दूहव्या तेह थकी हिवै छोड़िजी रां० ॥ २ ॥ मनिभाषै पातिक रिषि घात कि छटै ते ततकाल
 जी । सिद्धचक्र आराधन करतां आंणी भावि विसाल जी रां० ॥ ३ ॥ श्रीमती रांणीनै राजायै
 आराध्या गुणिनिधि जी । रांणीनी जे आठ सहेली तिण अनुमोदन कीध जी रां० ॥ ४ ॥ तप
 पूरै उजमणौ कीधौ विंठनरसै सात जी । धरमकांस नृपना अनुमोद्यां सुभभावन विष्यात जी
 रां० ॥ ५ ॥ स्वामि वयण थी ते दूक दिवसै सोहरायनौ गांस जी । भांजीनै गोधण लेई वलीया

सीहकेडै थयो तांमजी रा० ॥ ६ ॥ करि संग्राम हण्यासयसाते चलीकुल उतपन्नजी । रिषि
 उपसर्ग थकी थया कुष्टी विगड्यौ सज्जनौ तन्नजी रा० ॥ ७ ॥ पुन्य थकी श्रीपाल थयो तुं श्रीमती
 मयणा एहजी । पहिली पिण ताहरी हितवंछक इण भव परम सनेहजी रा० ॥ ८ ॥ सुनिनै
 जलपोडा उपजावी सायर पडीयो तेणजी । डूम्व कह्यौ ते डूम्व कहाण्यौ कुष्टी वयण वसेणजी
 रा० ॥ ९ ॥ श्रीमती वयणे पूज्यौ पहिली सिद्धचक्रगत पापजी । इण भव पिण मयणाने वयणे
 भागी सज्ज सन्तापजी रा० ॥ १० ॥ रिद्धि लही सिद्धि चक्र पसायै आठ सहेलो जेहजी । अनमोदन
 थोएथरै रांणी धरम तणा फल ऐहजी रा० ॥ ११ ॥ धर्म प्रसंसा थो सैसाते थया नीरोगी देह
 जी । सीह ग्रही व्रत अणसण अन्तै अजितसेन ऊँ एहजी रा० ॥ १२ ॥ बालपण्यौ राज्य

लीयौ मै पूरव वैर सम्भारिजी । करम जिसा जीवै भोगवीयै ज्ञानी वचन रसालजी रा० ॥१३॥

६७

राजा सुणि चमक्यौ चितमाहे ऐऐ करम विरूपजी । ढाल थई अडतालीसमीए कहै जिन हर्ष अनूप जी रा० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ८३७ ॥ दूहा ॥ राय कहै सुणि साधुजी दिक्षा सगतिन मुक्त । जे जांणी मुक्त जोग्यता ते कहौ प्रहू तुम्ह ॥ १ ॥ नवपदे ए आराधिस्युं सास्त्रो गति विधि जोग । एथी सज्ज सुष पांमिस्यौ लहिस्यौ उत्तम भोग ॥ २ ॥ सज्ज ए नरसुर भवकरी भोगवि अनुपम सुख । नवमै भववल तौसही सहिस्यौ अविचल सुख ॥ ३ ॥ ढाल ४८ इम ६७

धन्यौ धरुनै परचावै एहनी ॥ इण परि साधु तणी सुणि बाणी हरष्या राजा रांणीजी । आ- राधै जलट मन आंणी सिद्धचक्र गुण पांणीरे इ० ॥ १ ॥ श्रीनवकार गुणै सुभभावे जिनवर पूज

रचावैजी । जैन धरमसुं निज चित लावै जीर्णोद्धार करावैरे ॥ २ ॥ सामा इक पोषध व्रत
 पालै कुमति कदाग्रह टालैरे । श्रीजिनवर मारग उजवाले पाप थकी मनवालेरे ॥ ३ ॥ इण
 परिरिद्धि चक्र आराधी चढती सुरगति बाधीरे । दण भव पिण एहवी रिधि लाधी कोरति
 विभुवन बाधीरे ॥ ४ ॥ राजा राणी माइ संजुत्ता समकित गुण सुभचित्तरे । आज पूर्ण
 कर सुरग पुहत्ता पांस्या भोग समत्ताजी ॥ ५ ॥ तिहांथकी चविनर भव पांसी मयणा
 सुन्दरि सुपकन्दारे । पाली जिनवर आण अमन्दां काप्या भवना फन्दाजी ॥ ६ ॥ धनजगमै
 श्रीपाल नरिन्दा मयणा सुन्दरि सुपकन्दाजी । पाली जिनवर आण अमन्दाजी काप्या भव
 फन्दाजी ॥ ७ ॥ इम श्रीपाल चरित अनरागै श्रेणिक जिनवर आगैरे । कह्यौ गोतम गण

श्रीपा० च०

६८

हर वड़भांगै सांभलितांमति जागैरे ॥ ८ ॥ इम जांणो नवपदसुं राता सिद्धिचक्र जे ध्या-
तारे । नृप श्रीपाल तणी परिमाता रहै सदा सुतसातारे ॥ ९ ॥ संवत सतरै सै चालीसे चैचा
दिक सुजगीसैरे । सातिम सोमवार सुभदीसै पाटण विसवावीसैरे ॥ १० ॥ श्रीपरतर गच्छ
महिमाधारी जिनचन्द सूरप्रद्वधारीरे । शान्ति हरष वाचक सुषकारो तास सीस सुविचारौरे ॥
॥ ११ ॥ कहै जिन हरष भविक नर सुणिज्यौ नवपद महिमा युणिज्यौरे । उगण पचासे ढाले
गुणिज्यो निज पातक वन लुणिज्यौरे ॥ ११ ॥ सर्वगाथा १२२५ ढाल सर्वमिलकै संप्या भई ॥ ६८
ढाल ४९ ॥ इति श्रीसिद्धचक्रमहिमापरि श्रीश्रीपाल महाराय चतुष्पदिका समाप्ता ॥

रिसहजिणे सरसो जयो मङ्गलकेलि निवास । वासव-वन्दियपय कमल विजगजन पूरव
 आस ॥ १ ॥ ढाल ॥ चन्दकुलवर पुनिमचन्द वन्दो श्रीजिण कुशल सुणिन्द । नाम मन्त्रज
 सुमहिम निवास जो सुमरैतसु पूरवै आस ॥ २ ॥ मरुमण्डल समीयाँणौ गाम धणकण कञ्चण
 अति अमिरांम । तिहां निवसैं जेलहागर मन्त्रि ज्योति श्रीतसु धरणि पवित्र ॥ ३ ॥ जसुतेरै
 सैंलीसैं जन्म सैंतालै सिरि संयम रम्मा । पाटणिसतहो तरैज सुपाट निव्यासीयैतसु स्वर्गे वाट
 ॥ ४ ॥ भूमण्डल सुरगद् पाया सचिराचर जगिइणि कलिकाल । प्रभु प्रतापन विमानै जोइ
 भेन विनयणेंदीठो कोइ ॥ ५ ॥ निरधन लहै धनधन सुवन्न पुन्नहीण-पामै बज्जपुन्न । असुखी
 पामै सुखसन्तान एकतनां गुरुकरतां ध्यांन ॥ ६ ॥ प्रभु सुमरण आपद सविटलै श्रेय सान्ति सुख

सम्पति मिल । आधिव्याधि चिन्तासन्ताप सविच्छांड़ी नज्जमंडै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि-
 लागै तिहां प्रभुदरसण उत्कण्ठातिहां । सेवता सुरतरुनी छांहि निश्चैदालिद्रमेह्लै वांहि ॥ ८ ॥
 विसहर विसनिरवंस नरनाह भूतप्रेत ग्रह विन्तरराह । प्रभुनांमै जेन करै पीड भांजै भावट
 भवभय भीड ॥ ९ ॥ रोग सोग स विनासै दूर अन्धकार जिम जगैसूर । मरष फीटी पण्डित
 थाय प्रभु प्रताप दुखदुरीय पुलाय ॥ १० ॥ धन धन जिन सासन सुद्योत जिहा अछै भवसायर
 पोत । सो सदगुरुमें भेद्यो आज रलीय रंग सहस्रीधा काज ॥ ११ ॥ ढाल ॥ आजघर आंगण
 सुरतरु फलोयो चिन्तामणि करकमलै मिलीयो । उदयो परमानन्द करै आज दीहमें धन्ये ॥ १२ ॥
 गिणीयो । जुग पव राग मजोमें थुणीयो चन्द्र गच्छ महिमा निलौए ॥ १२ ॥ कांई करो पृथ्वी-

पति सेवा कांई मनावौ देवी देवा चिन्ता आणौ कोइ मने । वार२ एकवित भगीजै श्रीजिन
कुशलसूर समरीजै सरै काज आयास मनो ॥ १३ ॥ संवत चवद द्वासी वरसैं मुलक बाह्य
पुरवर मन हरसैं अजिय जिणेशर परि भवणे । कीयौ कवित्त ए मङ्गल कारण विघन हरन
बहु पाप निवारण कोइ मने शंसय धरौ मने ॥ १४ ॥ जिम२ सेवे सुरनर राया श्रीजिन कुशल
सुनी सरपाया जय सागर उवभाय पुणै । इम जे भागर गुण अभिनन्दै रिद्धि समृद्धि जे चिर
नन्दै मनवङ्कित फल सुभ जवौए ॥ १५ ॥ इति श्रीजिन कुशलसूरि स्तवनं ॥

